A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 02 नवंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 41, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

कला को आर्शीवाद....

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस पर लाल परेड ग्राउंड में आयोजित प्रदर्शनी में लोक कलाकारों को आशीर्वाद दिया।

फोटो: प्रवीण वाजपेई

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जिंदगी के लिए
बहुत कुछ नहीं
बस एक विश्वास चाहिए कि
हर सुबह
नई हो सकती है।

एक धड़कन
जो अपने होने को सुने
एक मौन
जो भीतर की बात कहे

जिंदगी के लिए
कभी रास्ता बदलना पड़ता है
तो कभी नजरिया
मगर चलना कभी नहीं रुकता

आशा का दीपक
अंधेरे में नहीं
अंतस में जलना चाहिए
क्योंकि उसी से जिंदगी
हर दिन
जी उठती है।

– डॉ. जीवन एस. रजक

रेलिंग टूटी, भागे लोग, जो दबा वो उठ न सका

आंध्र प्रदेश के वेंकटेश्वर मंदिर में भगदड़

दस की मौत

● संकरा गलियारा, रेलिंग पर फंसे लोग और चली गई जिंदगी ● महिलाएं-बच्चे चिल्लाते रहे

श्रीकाकुलम (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम स्थित काशीबुग्गा वेंकटेश्वर मंदिर में शनिवार को एकादशी के दौरान भगदड़ मचने से 10 लोगों की मौत हो गई। इनमें 8 महिलाएं और 2 बच्चे हैं। 25 से ज्यादा लोगों का इलाज चल रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार भारी भीड़ के दौरान धक्का-मुक्की की वजह से रेलिंग टूट गई। इससे भगदड़ मच गई। अधिकारियों को आशंका है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। सरकार ने हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। भगदड़ के कई वीडियो सामने आए हैं, जिसमें मंदिर की सीढ़ियों पर लोगों की भारी भीड़ दिखाई दी। इनमें महिलाएं, बच्चें और कई बुजुर्ग भी थे। इसी दौरान रेलिंग गिर गई और लोग भीड़ से दबने लगे। महिलाएं और बच्चे बाहर निकलने के लिए चीखते-चिल्लाते दिखे। कई तो अपनी जान बचाने के लिए लोगों के ऊपर चढ़कर निकलते दिखे। वहीं, हादसे ही बाद के वीडियो में लोग भीड़ में दबी महिलाओं और बच्चों को बाहर निकालते दिखे। महिलाएं भगदड़ वाली जगह पर इधर-उधर बेसुध पड़ी दिखाई दीं। लोगों ने भीड़ में से महिलाओं को उनके हाथ-पैर पकड़कर खींचते दिखाई दिए।

पीएम ने जताया दुख, 2 लाख की सहायता राशि का ऐलान

आंध्र प्रदेश के वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में हुई भगदड़ की घटना पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गहरा दुख व्यक्त किया है। साथ ही पीएम ने मृतकों के परिजनों के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से प्रत्येक को 2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। घायल व्यक्तियों को 50 हजार रुपये की सहायता राशि दी जाएगी। इस हादसे में अब तक 10 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम स्थित वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में हुई भगदड़ से बहुत दुख हुआ। मेरी संवेदनाएं उन लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल जल्द स्वस्थ हों। प्रत्येक मृतक के परिजनों को 2–2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी।

एक बटन दबाएंगे पीएम और लहराने लगेगा ध्वज

अयोध्या (एजेंसी)। भव्य राम मंदिर में 25 नवंबर को होने वाले ध्वजारोहण समारोह की तैयारियां जोरों पर हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वचालित प्रणाली से ध्वजारोहण करेंगे। इस दौरान वैदिक आचार्य समवेत स्वर में वैदिक मंत्रोच्चार करेंगे। मंदिर प्रांगण में करीब आठ हजार मेहमान उपस्थित रहेंगे। समारोह के लिए ऑटोमैटिक फ्लैग होइस्टिंग सिस्टम को उच्च सुरक्षा मानकों के साथ स्थापित किया गया है। यह प्रणाली कंप्यूटरीकृत कंट्रोल यूनिट से जुड़ी होगी। इससे एक बटन को दबाने मात्र से ध्वज फहराया जाएगा। मंदिर प्रांगण में रखे विशाल मॉनिटर पर ध्वजारोहण की पूरी प्रक्रिया लाइव दिखाई जाएगी। जब तक ध्वज राम मंदिर के 119 फीट ऊंचे शिखर तक पहुंचेगा तब तक वैदिक मंत्रोच्चारों की ध्वनि माहौल को भक्तिमय करेगी।

एमपी 70वां स्थापना दिवस पर ई-सेवा पोर्टल का शुभारंभ

सीएम ने की ओंकारेश्वर अभयारण्य बनाने की घोषणा, 611 वर्ग किलोमीटर का होगा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस पर राजधानी के लाल परेड ग्राउंड पर शुरुआत हुई। सीएम यादव ने यहां अभ्युदय मध्यप्रदेश प्रदर्शनी का शुभारंभ कर अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को ओंकारेश्वर अभयारण्य बनाने की घोषणा की। वे भोपाल में मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के मौके पर अभ्युदय कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अभयारण्य खंडवा और देवास जिले को मिलाकर बनाया जाएगा जो 611 वर्ग किलोमीटर का होगा इसके साथ ही डूब क्षेत्र को अभयारण्य से बाहर रखा गया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि जल्दी ही असम से जंगली भैंसा और गेंडे भी मध्य प्रदेश ले जाएंगे।

दरअसल, इंदिरा सागर बांध के निर्माण की स्वीकृति के करीब 39 साल बाद ओंकारेश्वर वन्यप्राणी अभयारण्य की उम्मीद बंधी है। खंडवा और देवास जिले के वन क्षेत्र को मिलाकर 614 वर्ग किलोमीटर में प्रस्तावित अभयारण्य के गठन का प्रस्ताव शासन स्तर पर लंबित था।

इसके बाद रविंद्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में सीएम यादव ने विजन डॉक्यूमेंट 2047 का विमोचन कर ई- सेवा नागरिक एप की शुरुआत की। इस दौरान केंद्रीय मंत्री किंजरापु राममोहन नायडू सहित कई जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान पीएम श्री पर्यटन सेवा योजना के तहत तीन एमओयू साइन भी किए गए हैं।

सीएम ने देखी अभ्युदय मध्यप्रदेश प्रदर्शनी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार सुबह लाल परेड ग्राउंड पहुंचकर प्रदेश के वैभवशाली अतीत, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उज्जवल भविष्य को चित्रों व छाया चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करती प्रदर्शनी अभ्युदय मध्य प्रदेश का शुभारंभ कर अवलोकन किया। प्रदर्शनियों में विकसित मध्य प्रदेश 2047, मध्य प्रदेश के गौरव विक्रमादित्य और मध्य प्रदेश, विक्रमादित्य की मुद्राएं और सिक्के, मध्य प्रदेश की बावड़ियां, प्रदेश की पारंपरिक कला, प्रदेश में विरासत से विकास, प्रदेश के मंदिर -देवलोक है शामिल। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ यादव का लाल परेड ग्राउंड पर प्रदेश के पारंपरिक नृत्य करते युवक युवतियों ने स्वागत किया।

केरल में अत्यधिक गरीबी खत्म, देश का पहला राज्य बना

- सीएम पिनाराई विजयन ने विधानसभा में कर दी घोषणा
- विपक्ष का बायकॉट, कहा- यह हकीकत नही पूरा फ्रॉड है

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने शनिवार को विधानसभा में राज्य ने अत्यधिक गरीबी से मुक्त होने की औपचारिक घोषणा की। लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट सरकार का दावा है कि केरल ऐसा करने वाला भारत का पहला राज्य है। पिनाराई सरकार ने राज्य से अत्यधिक गरीबी हटाने के लिए 2021 में अत्यधिक गरीबी उन्मूलन परियोजना शुरू की थी। इसके तहत 64,006 परिवारों की पहचान की गई थी। सरकार का दावा है कि 4 सालों के दौरान इन परिवारों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाल लिया गया है। केरल सीएम पिनाराई ने 25 अक्टूबर को एक्स पर कहा था कि राज्य अत्यधिक गरीबी से मुक्त हो गया है। उन्होंने कहा कि 1 नवंबर को केरल पिरवी या स्थापना दिवस के अवसर पर विधानसभा के विशेष सत्र में वह इसकी घोषणा करेंगे। सीएम ने कहा था कि 1,000 करोड़ से अधिक के निवेश के साथ, राज्य सरकार ने अत्यधिक गरीबी से जूझ रहे परिवारों को हर रोज खाना, स्वास्थ्य सेवाएं, घर, जरूरी दस्तावेज जैसे राशन कार्ड, आधार, पेंशन और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए। विपक्ष ने सदन का

बहिष्कार किया, कहा- सीएम का दावा फ्रॉड कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट ने पिनाराई सरकार के दावे को धोखाधड़ी करार दिया है। विपक्ष ने सरकार के विरोध में शनिवार को विशेष सत्र का बहिष्कार किया। जैसे ही विधानसभा का विशेष सत्र शुरू हुआ, सभी विपक्षी विधायक सदन से बाहर चले गए। केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वी डी सतीशन ने कहा कि नियम 300 के तहत मुख्यमंत्री का बयान गलत और सदन के नियमों के खिलाफ है। विपक्ष के आरोपों का मुख्यमंत्री ने जवाब दिया है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 02 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

आरएसएस के सरकार्यवाह बोले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सभी पार्टियों का राजनीतिक दृष्टि से जातिगत जनगणना गलत

कांग्रेस को पहले के अनुभव से सीख लेना चाहिए

जबलपुर (नप्र)। राजनीतिक दृष्टि से जातिगत जनगणना नहीं होना चाहिए, क्योंकि देश में कुछ जातियां पीछे रह गई हैं और सिर्फ पिछड़ों के भले के लिए ही आंकड़े का इस्तेमाल किया जा रहा है। अगर राजनीति के लिए ये इस्तेमाल होगा, तो इससे विभेद बढ़ेगा। यह बात राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर कार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने कही।

वे जबलपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक के बारे में पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि बंगाल को ऐसे रखने के लिए देश के साथ अन्याय हो रहा है। अस्थिरता फैलाने वालों को बंगाल में राजनीतिक प्रश्रय उठाना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि लाइव इन रिलेशनशिप संस्कृति के लिए ठीक नहीं है, लेकिन यह भी सच है कि हर गलती कानून से नहीं रुकेगी, इसके लिए समाज को संस्कार देकर पहले विकृति को रोकना होगा।

एसआईआर को लेकर कहा कि मतदाता सूची जरूरी है और इस प्रक्रिया पर जिन्हें शक है उन्हें चुनाव आयोग के पास जाना चाहिए। संघ की जबलपुर बैठक में देशभर से वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल हुए हैं, जहां संगठन के आगामी कार्यक्रमों और सामाजिक अभियानों को लेकर चर्चा की जा रही है।

नेताओं को पहले के अनुभव से सीख लेनी चाहिए- कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर बैन लगाने की बात कहे जाने के बाद शनिवार को संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने तीखा जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पहले भी संघ पर तीन बार प्रतिबंध लगाने का प्रयास कर चुकी है, अब चाहे तो चौथी बार भी कोशिश कर ले।

जबलपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक के दौरान होसबोले ने कहा -जो संगठन भारत के समाज और राष्ट्रनिर्माण में जुटा है, उस पर प्रतिबंध लगाने की बात कहने वाले नेताओं को पहले के अनुभव से सीख लेनी चाहिए। कांग्रेस ने पहले भी तीन बार संघ पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की थी। अब वे चाहें तो फिर प्रयास करके देख लें, लेकिन पहले यह भी बताएं कि आखिर संघ पर बैन लगाने की जरूरत क्यों है?

उन्होंने आगे कहा कि आरएसएस को समाज ने स्वीकार किया है और पहले लगाए गए प्रतिबंधों को भी अदालत ने गलत ठहराया था। जब पहले प्रतिबंध लगाया गया था, तब न्यायालय ने क्या कहा था? और कांग्रेस को उससे क्या मिला? इतने सबके बावजूद संघ लगातार आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष से सवाल किया कि जब आरएसएस देश की सुरक्षा, संस्कृति और विकास के लिए काम कर रहा है, तो ऐसे संगठन पर बैन लगाने की बात कहना किस आधार पर उचित है।

धर्मांतरण रोकना और घर वापसी जरूरी

आरएसएस के संघ के सरकार्यवाह ने कहा कि देश में बढ़ते धर्मांतरण पर भी संघ ने इस कार्यकारी बैठक पर चर्चा की है। धर्मांतरण रोकना और घर वापसी कराना भी अब जरूरी हो गया है। देशभर में धर्म जागरण को लेकर संघ कार्य भी कर रहा है। जनजातीय क्षेत्रों में विशेष प्रयास किया जा रहे हैं कि धर्मांतरण रोकने के साथ-साथ धर्म जागृति भी कैसे फैलाई जाए। उन्होंने कहा कि धर्म गुरुओं से यह कार्य होंगे और घर वापसी के साथ धर्म जागरण का कार्य भी संघ लगातार कर रहा है। पंजाब में धर्मांतरण की एक बड़ी समस्या है और वहां पर साजिश के तहत ही धर्मांतरण किया जा रहा है। हिंदू धर्म में संघ लगातार घर वापसी के भी प्रयास कर रहा है।

संघ में भाजपा कार्यकर्ता ज्यादा, पर हम सभी के

होसबाले ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सभी पार्टियों का है, लेकिन यहां यह सच है कि हमारे संघ में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता ज्यादा हैं। सरकार किसी भी पार्टी की हो, लेकिन हम अपने विचार सभी के समक्ष रखते हैं। आज सरकार में संघ के स्वयं सेवक बैठे हैं, इसलिए हमारे और भाजपा के बीच समन्वय बना हुआ है। आरएसएस का दरवाजा सभी के लिए खुला है, यह भी सच है कि भाजपा में घर के ही लोग हैं।

पाकिस्तानी एजेंट हैं गोगोई, मैं साबित करके दिखाऊंगा

- असम सीएम हिमंता बिस्वा सरमा ने दे डाली चुनौती

दिसपुर (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने एक बार फिर कांग्रेस सांसद पर उन्हें पाकिस्तानी एजेंट बताते हुए करारा हमला बोला है। सरमा ने कहा कि विदेशी ताकतों ने उन्हें अपने फायदे के लिए भारत में प्लांट किया है। सरमा ने चुनौती देते हुए कहा कि अगर गोगोई के अंदर दम है तो मानहानि का मुकदमा करके दिखाएं। उन्होंने कहा कि गायक जुबिन गर्ग के परिवार को न्याय दिलवाने के बाद वह अपने इन आरोपों को भी साबित करके दिखाएंगे। सरमा ने कहा, गौरव गोगोई पाकिस्तानी एजेंट हैं। मेरे पास इसके सबूत हैं। उन्हें हमारे देश में विदेशी ताकतों ने प्लांट किया है। मैं तथ्यों के साथ यह बात कह रहा हूं। मैं एक दिन इसे साबित कर दूंगा। बता दें कि गौरव गोगोई परउनकी पत्नी एलिजाबेथ कोलबर्न की वजह से पहले भी आरोप लग चुके हैं।

आतंकियों के फन कुचलने का हो गया है इंतजाम!

- रात में आर्मी के सैन्य अभ्यास का खुल गया राज
- आर्टिकल 51 के इस्तेमाल का भी मिल गया हक

नई दिल्ली (एजेंसी)। आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए भारत अब नई रणनीति पर काम कर रहा है। इसके तहत भारतीय सेना न्यू नॉर्मल के दिशा-निर्देश को फॉलो कर रही है। न्यू नॉर्मल वह सिचुएशन है, जिसमें किसी भी तरह की आतंकी गतिविधि को युद्ध की कार्रवाई माना जाता है। इससे भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर के आर्टिकल 51 के इस्तेमाल का भी हक मिल गया है। यह आर्टिकल आत्मरक्षा के हक के लिए है। इस तरह अब अगर किसी ने भी भारत के खिलाफ आतंकी हरकत करने की कोशिश की तो भारत बड़ी आसानी से उसे कुचल सकेगा। भारतीय सेना नई रणनीति के हिसाब युद्ध की तैयारियों में जुटी में हुई है। इसके तहत 70 फीसदी ट्रेनिंग रात के वक्त और 30 फीसदी ट्रेनिंग दिन में हो रही है। दक्षिण-पश्चिम आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना 'न्यू नॉर्मल' के पॉलिटिकल डायरेक्शन को फॉलो कर रही है। इसके मुताबिक देश में कोई अभी आतंकी गतिविधि को युद्ध का काम माना जाएगा। ऐसे किसी भी हालात करने के लिए सेना पूरी तरह से तैयारी में जुटी है।

आईसीसी महिला वर्ल्ड कप का फाइनल मुकाबला आज

- भारत-साउथ अफ्रीका में से कौन बनेगा चैंपियन, होगा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। 2025 आईसीसी महिला वनडे विश्व कप का फाइनल कल 2 नवंबर को नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेला जाएगा। यह मुकाबला दोनों टीमों के लिए पहला विश्व खिताब जीतने का सुनहरा मौका है। हालांकि, इस बड़े मैच पर मौसम की मार पड़ने की आशंका है क्योंकि हल्की बारिश की संभावना जताई जा रही है। आईसीसी के नियमों के अनुसार फाइनल के लिए एक रिजर्व डे रखा गया है लेकिन कोशिश यही रहेगी कि मैच उसी दिन पूरा हो जाए भले ही ओवर कम करने पड़ें। अगर किसी भी तरह से मैच पूरा नहीं हो पाता है तो रिजर्व डे पर खेला जाएगा। अगर दोनों दिन बारिश के कारण मैच नहीं हो पाता है तो दोनों टीमें संयुक्त विजेता घोषित की जाएंगी। मुंबई का माहौल इस समय काफी गरमाया हुआ है। 74 फीसदी नमी, 31सेंटीग्रेट तापमान और 18 केपीएच की हवा के साथ-साथ, दोनों टीमों के बीच अपने पहले विश्व खिताब को जीतने की जबरदस्त उम्मीदें भी हवा में हैं। फिलहाल, हल्की बारिश की संभावना है और 30 पीसदी तक ऐसे आसार हैं कि मैच में रुकावट आ सकती है। इससे फैंस आसमान की ओर टकटकी लगाए हुए हैं और सोच रहे हैं कि अगर टूर्नामेंट के सबसे बड़े मैच में बाधा आती है या वह धुल जाता है तो क्या होगा। आईसीसी के मौजूदा नियमों के तहत 2 नवंबर को होने वाले फाइनल के लिए एक रिजर्व डे तय है।

राजस्थान में 108 साल बाद सबसे ज्यादा बारिश

- हिमाचल में तापमान-1.2 डिग्री, देश में कड़ाके की सर्दी में देर

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान में 108 सालों के बाद 2025 में सबसे ज्यादा बारिश हुई है। राज्य में जुलाई से सितंबर तक, 715.2 मिमी बारिश दर्ज की गई। इससे पहले साल 1917 में मानसून सीजन के दौरान सबसे ज्यादा 844.2 बारिश हुई थी। हिमाचल प्रदेश में भी बारिश ने अक्टूबर महीने में नए रिकॉर्ड बनाए। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, हिमाचल में इस साल अक्टूबर में 2005 के बाद सबसे ज्यादा बारिश, 68.5 मिमी बारिश दर्ज की गई। यह सामान्य औसत 25.1 मिमी से 173 फीसदी ज्यादा है। आईएमडी के पूर्वानुमान के अनुसार, हिमाचल में 4 नवंबर और 5 नवंबर को बारिश या बर्फबारी की संभावना है। राज्य के ताबो और कुकुमसेरी में तापमान माइनस में चला गया है।

चरम पर पहुंचा प्रचार, बिहार में आर-पार

- शाह बोले-यह बिहार का भविष्य तय करने का चुनाव
- प्रियंका ने कहा-महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ रहे

पटना/नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बिहार के गोपालगंज में वर्चुअली चुनावी जनसभा को संबोधित किया। खराब मौसम के कारण उनका हेलीकॉप्टर पटना से उड़ान नहीं भर पाया। अपने भाषण में शाह ने जंगलराज की याद दिलाई, साथ ही बंद पड़े चीनी मिलों को चालू कराने का वादा किया। बेगूसराय के बछवाड़ा में प्रियंका गांधी ने सभा की। बढ़ते क्राइम को लेकर प्रियंका ने सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, बिहार में क्राइम चरम पर है। बिहार में महिलाएं असुरक्षित हैं।

- शाह बोले-हम बंद चीनी मिलों को चालू करेंगे - गोपालगंज में करीब 5 मिनट के अपने भाषण में शाह ने कहा,पीएम ने बंद पड़ी रीगा चीनी मिल को चालू करने का काम किया है। बिहार की बाकी बंद पड़ी चीनी मिल को अगले 5 साल में चालू किया जाएगा। ये चुनाव विधायक चुनने का नहीं है। ये चुनाव बिहार का भविष्य तय करने का है। बिहार किसके हाथ में रहेगा। जिन्होंने सालों तक बिहार में जंगलराज थोपा उसके या नरेंद्र जी और नीतिश जी के नेतृत्व में जो बिहार का विकास हुआ उसे चुनेगा। साधु यादव के कारनामे गोपालगंज वालों से ज्यादा किसको मालूम हैं। जंगलराज के दौर में कई नरसंहार हुए, जिनमें बथानी टोला, सोनारी, शंकरबीघा नरसंहार जैसे अलग-अलग 34 नरसंहार हुए थे।

- प्रियंका बोलीं-प्रचार में मर्डर हो रहा,उद्योगपति मारे जा रहे- बेगूसराय के बछवाड़ा में प्रियंका गांधी ने शनिवार को सभा की। बढ़ते क्राइम को लेकर प्रियंका ने सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, बिहार में क्राइम चरम पर है। उद्योगपतियों की हत्या हो रही है। हाल में चुनाव प्रचार में नेता की हत्या कर दी गई। महिलाएं असुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि 20 सालों से बिहार में एनडीए की सरकार है। आपको आपके अधिकार नहीं दिए गए। आपको बांटने की राजनीति की। देशभर में झूठा राष्ट्रवाद दिखाया गया। हाल में इन लोगों ने एसआईआर करवाकर 65 लाख वोट काट दिए। इसके कटने का मतलब क्या है। आपके अधिकार कट रहे हैं। आपको कमजोर किया जा रहा है।

देश में 2013 के बाद नहीं हुआ कोई बड़ा आतंकी हमला

अजीत डोभाल बोले-सिर्फ जम्मू और कश्मीर तक रहा सीमित

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ह्न अजीत डोभाल ने सरदार पटेल मेमोरियल लेक्चर में देश की सुरक्षा स्थिति पर विस्तार से बात की। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि 2013 के बाद से जम्मू-कश्मीर को छोड़कर पूरा देश आतंकवादी हमलों से सुरक्षित रहा है। एनएसए अजीत डोभाल ने कहा कि तथ्य तो तथ्य हैं, और इन पर कोई विवाद नहीं हो सकता। इस देश में आतंकवाद का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया गया है। 1 जुलाई, 2005 को आतंकवाद की एक बड़ी घटना हुई थी, और आखिरी घटना 2013 में देश के अंदरूनी इलाकों में हुई थी। इसके बाद जम्मू-कश्मीर को छोड़कर पूरा देश आतंकवादी हमलों से सुरक्षित रहा है। सरदार पटेल स्मारक व्याख्यान को संबोधित करते हुए एनएसए अजीत डोभाल ने कहा कि जम्मू कश्मीर को छोड़कर देश के अंदरूनी इलाकों में कोई आतंकी हमला नहीं हुआ है, हालांकि दुश्मनों ने अपनी गतिविधियां जारी रखी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि 2014 के बाद से वामपंथी उग्रवाद में तेजी से कमी आई है। दुश्मन बहुत सक्रिय रहे हैं, लेकिन सौभाग्य से, और यह देश के लिए सौभाग्य की बात है कि हम कह सकते हैं कि हमारे भीतरी इलाकों में कोई आतंकवादी घटना नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि वामपंथी उग्रवाद 2014 की तुलना में 11 प्रतिशत से भी कम क्षेत्रों में सिमट गया है। जिन जिलों को वामपंथी उग्रवाद प्रभावित घोषित किया गया था, उनमें से अधिकांश को सुरक्षित घोषित कर दिया गया है।

सीएम नीतिश कुमार ने बिहार के लोगों को भेजा मैसेज

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाइटेड के नेता नीतिश कुमार ने शनिवार को राज्य के लोगों से एक बार फिर एनडीए को वोट देने की अपील की। उन्होंने कहा कि 'अब बिहारी होना गर्व की बात है और राज्य के समग्र विकास के लिए एनडीए सरकार का बने रहना जरूरी है। अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट से भेजे गए वीडियो मैसेज में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कहा कि उनकी सरकार बनने के बाद से बिहार में कानून-व्यवस्था की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा, 'लोग जानते हैं कि 2005 से पहले स्थिति क्या थी।

सड़क पर फेंका कचरा तो वापस आएगा आपके घर

बेंगलुरु शहर में सफाई की 'रिटर्न गिफ्ट' मुहिम शुरू

बेंगलुरु (एजेंसी)। गली में घर का कचरा फेंकने वालों को सबक सिखाने के लिए बेंगलुरु नगर निगम ने अनोखा उपाय निकाला है। यहां पर खासतौर पर 'रिटर्न गिफ्ट' मुहिम चल रही है। यहां पर जो भी व्यक्ति गली में कचरा फेंकेगा, कचरा वापस उसके घर में फेंक दिया जाएगा। ग्रेटर बेंगलुरु अथॉरिटी ने यह फैसला किया है। अथॉरिटी 'गारबेज डंपिंग फेस्टीवल' मना रही है। इसके तहत उन लोगों को सबक सिखाने की कोशिश की जा रही है, जो घर का कचरा सड़क पर फेंक देते हैं। इसका मकसद शहर में सफाई अभियान को बेहतर करना है। बेंगलुरु सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट लिमिटेड (बीएसडब्लूएमएल) के सीईओ करिगौड़ा ने इसके बारे में जानकारी दी। एनडीटीवी के मुताबिक बेंगलुरु में हमारे पास करीब 5000 ऑटो हैं। यह सभी घर-घर जाकर सूखा और गीला कचरा इकट्ठा करते हैं। इसके बावजूद कुछ लोग सड़क पर कचरा फेंकते हैं।

मैं डरने वाला नहीं हूं, चुनाव प्रचार में बिहार जाऊंगा

- जान से मारने की मिली धमकी के बाद बोले सांसद रवि किशन

गोरखपुर (एजेंसी)। यूपी के गोरखपुर से सांसद रवि किशन के निजी सचिव के फोन पर रवि किशन को जान से मारने की धमकी दी गई थी, तब से लेकर मामला बेहद गर्म हो चुका है। अब सांसद रवि किशन ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा कि ना तो मैं डरूंगा और ना ही झुकूंगा, चाहे इसके लिए मुझे कोई भी कीमत चुकानी पड़े मेरी मां और प्रभु श्री राम के लिए अपशब्द कहे गए हैं, यह कत्तई बर्दाश्त लायक नहीं। दरअसल, गुरुवार की देर रात खुद को बिहार के आरा जिला निवासी बताते हुए अजय कुमार यादव नामक एक सख्स ने गोरखपुर के सांसद रवि किशन के निजी सचिव शिवम दुबे के फोन पर कॉल किया और धमकी देते हुए कहा कि रवि किशन नौटंकीबाजी कर रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर धर्म युद्ध, यह जारी रहेगा

जनरल द्विवेदी बोले-हमने कभी नमाज के वक्त हमला नहीं किया

सतना (एजेंसी)। भारतीय थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी शनिवार को सतना में हैं। वे 53 साल बाद अपने बचपन के स्कूल सरस्वती हायर सेकेंडरी स्कूल पहुंचे। आर्मी चीफ ने कहा-ऑपरेशन सिंदूर एक धर्म युद्ध था, यह आगे भी जारी रहेगा।

हमने किसी भी निर्दोष को नुकसान नहीं पहुंचाया, न ही नमाज या किसी भी धार्मिक प्रार्थना के समय हमला किया। आर्मी चीफ उपेंद्र द्विवेदी ने बताया कि 1971-72 में चौथी क्लास में इस स्कूल में पढ़े हैं। इतने सालों बाद अपने स्कूल लौटकर वह भावुक हो गए। ऑपरेशन सिंदूर ने पूरे देश को एक सूत्र में बांधा। सिद्धांत और तकनीक के संयोजन से मिशन सफल हुआ। पाकिस्तान को साफ संदेश दिया कि हम धर्म युद्ध के अनुयायी हैं और आगे भी यही नीति अपनाएंगे। स्कूल के दिनों में सीखी निर्णय क्षमता ने उन्हें सेना में कई सफलताएं दिलाईं।

चौथी कक्षा में यहीं से निर्णय लेने की क्षमता मिली, इसी ने ऑपरेशन सिंदूर में निर्णायक सफलता दिलाई। यह वही स्कूल है, जिसने उनके व्यक्तित्व और राष्ट्र सेवा के संकल्प को मजबूत किया। जनरल द्विवेदी ने छात्रों से कहा, सफलता की नींव विद्यार्थी जीवन में ही रखी जाती है। उन्होंने सफलता का मंत्र श्री ए बताया।

इंटलेक्ट हाइट्स एकेडमी, देवास नाका के स्टूडेंट और स्टाफ इंदौर ट्रैफिक पुलिस के 'ट्रैफिक प्रहरी अभियान' से जुड़े और उन्होंने सड़क सुरक्षा व यातायात नियमों को जाना। साथ ही चौराहों पर अपनी सेवाएं भी दी। ट्रैफिक पेट्रोलिंग बाइक की उपयोगिता को समझा। लाइसेंस बनवाने, सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी के साथ चौराहों पर यातायात संचालन में सेवा दी। तख्ती, बैनर, पोस्टर के माध्यम से जागरूकता वाहन चालकों से यातायात नियमों के पालन की अपील भी की।

मकान दिलाने का भरोसे देकर डेढ़ साल पहले 15 लाख की ठगी की

9 माह से देता रहा आश्वासन, अब दर्ज हुई ठगी की शिकायत

इंदौर। एक बदमाश ने मकान का सौदा करने के नाम पर डेढ़ साल पहले 15 लाख रुपए ठग लिए। इस मामले की चार दिन पहले चंदन नगर थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई गई। शिकायत की जांच के बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

फरियादी अब्दुल हसीम ने बताया कि वह मस्जिद में नमाज पढ़ाते हैं। इसी दौरान उनकी मुलाकात मोहम्मद वसीम उर्फ अदब टेलर पिता मोहम्मद रईस निवासी चंदन नगर से हुई। धीरे-धीरे वह घर आने लगा और बातचीत के दौरान बताया कि वह प्रॉपर्टी ब्रोकर का काम करता है और कई सौदे करवा चुका है। अदब टेलर ने अब्दुल हसीम को भी मकान दिलाने का भरोसा दिलाया। इसके बाद अब्दुल हसीम ने एक प्रॉपर्टी बेची और पैसे दिए। अदब टेलर ने रानी पैलेस में जमीन दिलाने का आश्वासन दिया।

20 फरवरी 2025 को विक्रय अनुबंध भी कराया गया, लेकिन डॉक्यूमेंट तैयार होने के बाद भी अदब टेलर ने कब्जा नहीं दिलाया। जब अब्दुल हसीम ने सवाल किया, तो आरोपी टालमटोल करने लगा और पिछले 9 माह से झूठे आश्वासन देता रहा। अब्दुल हसीम ने शिकायत में यह भी कहा कि जब उन्होंने अदब टेलर से पैसे वापस मांगे तो उसने अपशब्द कहे और जान से मारने की धमकी दी। इसके साथ ही अब्दुल हसीम ने बताया कि उनके परिवार की भी जान को खतरा है।

छह बदमाश हुए जिला बदर, 6 देंगे हाजिरी, अपराध के खिलाफ सख्ती

इंदौर। शहर में बढ़ती चाकूबाजी और अन्य वारदातों ने पुलिस की सख्ती को बेअसर साबित कर दिया है। लगातार बढ़ते अपराधों को रोकने पुलिस आयुक्त संतोषसिंह के निर्देश पर छह बदमाशों को जिलाबदर और छह बदमाशों को संबंधित थाने में हाजिरी देने की सजा दी है।

पुलिस के अनुसार, आरोपी केशव उर्फ केसू पिता दिलीप राठौर निवासी इंदिरा नगर थाना मल्हारगंज को एक साल, राहुल उर्फ गोलू खलीफा पिता स्व. ज्ञानचंद्र धीमान निवासी संविद नगर थाना तिलक नगर छह माह, आकाश उर्फ खुश पिता राधेश्याम निगवाल निवासी हिम्मतनगर पालदा थाना भंवरकुआं, विवेक उर्फ काणा पिता हंसराज बरुआ निवासी पंचम की फेल थाना तुकोगंज, राकेश पिता बृजगोपाल शाह निवासी प्रीति नगर बंगाली चौराहा थाना खजराना तथा अमित उर्फ बकरी पिता रामखिलावन निवासी न्यू हरसिद्धि नगर थाना खजराना को छह माह के लिए जिला बदर किया है।

जबकि, बदमाश अमजद पिता युसूफ मंसूरी निवासी लोहा गेट थाना चंदन नगर को 6 माह, मनोज पिता जगदीश यादव निवासी बालदा कॉलोनी थाना छत्रीपुरा को 1 वर्ष, सत्यम उर्फ कर्तव्य पिता दिनेश मराठा निवासी आईडिया मल्टी स्कीम नंबर 155 थाना एरोड्रम को 1 वर्ष, रोहित उर्फ सन्नी पिता संजय शिंदे निवासी कृष्णपुरा इमली बाजार हाल मुकाम सुविधि नगर थाना एरोड्रम को 6 माह, आनंद उर्फ भूरा पिता कैलाश मोरे निवासी काजी की चाल थाना तुकोगंज को 1 वर्ष तथा मुकेश पिता रामकुमार यादव निवासी सेक्टर बी कुशवाह नगर थाना बाणगंगा को 6 माह थाना हाजिरी पर रहना होगा।

'उठो देव सांवला' की गूंज के साथ देवउठनी ग्यारस मनी, शादियां और शुभ कार्य प्रारंभ

अधिकांश मैरिज गार्डन, होटल और धर्मशालाएं बुक, अब होगी शादियों की धूम

इंदौर। 'उठो देव सांवला, बोर भाजी आंवला' के उद्घोष के साथ शनिवार शाम देवउठनी ग्यारस मनी। इसके साथ ही शादी-ब्याह और शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त शुरू हो गए। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष पर तुलसी और शालिग्राम विवाह मनाया जाकर शाम को आतिशबाजी की गई।

इस दिन को देव (छोटी) दीवाली भी कहते हैं। इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की योग निद्रा से जागते हैं और उनके जागने के साथ ही विवाह एवं शुभ कार्यों का शुभ मुहूर्त प्रारंभ होता है। तुलसी और शालिग्राम का विवाह गन्ने के मंडप में होता है। इसके बाद सभी मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है।

चार महीने की देवशयन अवधि के बाद भगवान विष्णु के जागरण के साथ अब शुभ कार्यों का सिलसिला शुरू हो गया। विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन और नामकरण जैसे शुभ कार्य शुरु हो गए। पंडितों के अनुसार देवशयन एकादशी से देवउठनी ग्यारस तक भगवान विष्णु योग निद्रा में रहते हैं, इसलिए इस अवधि में विवाह जैसे शुभ कार्य नहीं किए जाते। इस बार नवंबर से दिसंबर तक लगभग 18 शुभ मुहूर्त हैं, जिनमें हजारों विवाह होंगे।

होटल, मैरिज गार्डनों में बुकिंग- वैवाहिक आयोजन को लेकर शहर की कई होटलों, मैरिज गार्डनों, धर्मशालाओं की बुकिंग हो चुकी है। सजावट से लेकर बुकिंग तक हर जगह रौनक लौट आई है। इवेंट मैनेजमेंट कंपनियों के अनुसार इस बार शादियों में पहले की तुलना में खर्च भी बढ़ा है। कोविड के बाद 3 साल में लोगों की शादियों को लेकर रुचि और भव्यता दोनों में वृद्धि हुई है। अब ज्यादातर परिवार थीम-बेस्ड डेकोरेशन, लाइव म्यूजिक और डेस्टिनेशन वेडिंग का विकल्प चुन रहे हैं। इंदौर और आसपास के रिसॉर्ट्स जैसे महू, देवास रोड और पीथमपुर स्थित फार्महाउस में भी एडवांस बुकिंग चल रही है। कई बड़े होटल 70 से 80 प्रतिशत तक बुक हो चुके हैं। वहीं, खानपान और कैटरिंग व्यवसायियों के पास भी ऑर्डर की भरमार है। इस बार प्रति प्लेट दरों में 10 से 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई, बावजूद इसके मांग घटी नहीं है। वेडिंग फोटोग्राफर, मेकअप आर्टिस्ट और बैंड पार्टी वालों के पास भी बुकिंग की लाइन लगी है।

थोक में गन्ना 10 से 20 रुपए

चोइथराम मंडी में शुक्रवार को गन्ने की 15 ट्रक आवक रही। यहां 10 से 20 रुपए प्रति नग में गन्ना नीलाम हुआ। खेरची में ठेले पर यही गन्ना 20 से 40 रुपए नग में बिका। गन्ने के दाम उनके आकार और मोटाई के मान से तय किया जाता है। गन्ने के साथ बाजार में पांच फलों की टोकरी भी 50 से 80 रुपए में बिक रही है। तुलसी विवाह में इन पांच फलों का चढ़ावा होता है।

बाल विवाह रोकने निकली टीम

देवउठनी ग्यारस पर अबूझ मुहूर्त में विवाह समारोह होते हैं। कई सामाजिक संस्थाएं सामूहिक विवाह कराती है। इन विवाहों में बाल विवाह न हो सके, इसे देखते हुए महिला बाल विकास विभाग ने लाडो अभियान के तहत टीम गठित की। इस टीम ने शिकायत मिलने पर कई समारोह स्थल पर जाकर दूल्हा-दुल्हन के आयु प्रमाण पत्र जांचे। जानकारी के मुताबिक कुछ जगह शिकायत सही पाई गई।

दोस्तों के साथ मिलकर भतीजे ने चाचा के जेवर और नकदी चुराए

इंदौर। चाचा के घर से भतीजे ने 13 लाख के जेवर और 47 हजार रुपए चुरा लिए। इस काम में उसकी दो दोस्तों ने मदद की। वारदात के बाद आरोपियों ने पैसे शराबखोरी और अन्य नशे में खर्च कर दी। शिकायत के बाद परदेशीपुरा पुलिस ने 24 घंटे में आरोपियों को पकड़ लिया।

फरियादी जयश्री पति संजीव खापर्डे निवासी परदेशीपुरा ने बताया कि 24 अक्टूबर को वह अपने पूरे परिवार के साथ दो दिन के लिए सप्तश्रृंगी मंदिर जलगांव दर्शन करने गई थी। जब वह 26 अक्टूबर को अपने परिवार सहित जलगांव से घर पहुंची तो घर के पीछे वाली खिड़की खुली थी और अलमारी का लॉकर टूटा हुआ था। अंदर जाकर देखा तो अलमारी में रखे मंगलसूत्र, 3 जोड़ी कान के बाले, झुमकी, सोने की चेन, टाप्स, सोने की तीन अंगूठी, सोने की दो चूड़ियां, ओमपान डिजाइन का लॉकेट 47,000 रुपए गायब थे। महिला ने तत्काल थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 331 (4), 305 का प्रकरण दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू की।

- **एक साथ रहते हैं आरोपी और फरियादी, नशे में खर्च किए पैसे**

परदेशीपुरा थाना प्रभारी आरडी कानवा ने बताया कि घटना के बाद सूचना तंत्र को सक्रिय किया गया था। सूचना मिली कि तीन युवक नशाखोरी और अन्य कामों में खूब पैसा खर्च कर रहे हैं, जबकि उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है। शक होने पर पुलिस ने फरियादी के भतीजे आतिश पिता वाल्मीकि खोपर्डे निवासी परदेशीपुरा को पकड़ा और पूछताछ की तो वह टूट गया। उसने बताया कि मेरे चाचा-चाची बाहर जाने वाले थे, इसकी मुझे जानकारी थी, इसलिए मैंने उनके जाने के दूसरे दिन अपने दोस्त रोहित पिता रामस्वरूप देवडा निवासी और कार्तिक पिता सुंदर लाल प्रजापत निवासी परदेशीपुरा की मदद से पीछे वाली खिड़की में घर में घुसा और अलमारी का लॉकर तोड़कर सोने के गहने और नगदी 47 हजार रुपए चुरा लिए थे। पुलिस आरोपियों से अन्य वारदातों को लेकर भी पूछताछ कर रही है।

पटाखे फोड़ने पर 3 युवकों को पीटा परिवार से पाइप, डंडों से मारपीट

कार्यक्रम में आए मेहमानों ने दोनों पक्षों को अलग-अलग किया

इंदौर। निकाह के कार्यक्रम में घर के सामने आतिशबाजी करना परिवार के लोगों को भारी पड़ा। पड़ोसियों ने परिवार के तीन युवकों को पाइप और डंडों से जमकर पीटा। घटना के दौरान कार्यक्रम में आए मेहमानों ने दोनों पक्षों को अलग-अलग किया। मामले में चंदन नगर पुलिस ने लोहा गेट निवासी निजामुद्दीन मंसूरी की शिकायत पर मोहम्मद आजम, शरीफ पिता मोहम्मद असलम, मोहम्मद यासीर पिता मोहम्मद असलम पर एफआईआर दर्ज की है। फरियादी ने बताया कि सगाई का कार्यक्रम होने के बाद वह अपने ताऊ के बेटे जुल्फिकार मंसूरी के साथ अपने घर के सामने आतिशबाजी कर रहे थे। उसी समय मोहम्मद आजम, शरीफ और यासीर आ गए। उन्होंने आतिशबाजी बंद करने को कहा। हमने उनसे कहा कि सगाई का घर है, इसलिए खुशी में आतिशबाजी हो रही है। इसी बात को लेकर तीनों अपशब्द कहने लगे। शरीफ और यासीर ने जुल्फिकार को पकड़ लिया। मोहम्मद आजम ने पाइप से जुल्फिकार को जान से मारने की नीयत से सिर में मारा, इससे जुल्फिकार को सिर और कान से खून निकलने लगा और वह बेहोश हो गया। मोहम्मद इमरान मंसूरी बीच-बचाव के लिए आया तो उसे भी आजम ने पाइप से सीने पर मारा, जिससे उसे चोट आई है। इसके बाद आरोपियों ने परिवार के सभी लोगों को गालियां देना शुरू कर दिया। इस दौरान जो भी बचाव में आया उस पर डंडे और पाइप से हमला कर दिया। पुलिस को सूचना दी गई तो आरोपी भाग गए।

कांग्रेस नेता पिंटू जोशी को देर रात हार्ट अटैक, 'शेल्बी' में वेंटिलेटर पर

डॉक्टरों ने पाया कि उन्हें एक के बाद एक दो बार अटैक आए

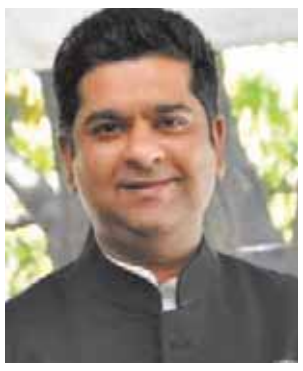

इंदौर। अचानक सीने में दर्द की शिकायत होने पर कांग्रेस के नेता दीपक पिंटू जोशी को तत्काल शेल्बी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। शुक्रवार रात उन्हें दो बार हार्ट अटैक आया। डॉक्टरों ने सीपीआर देकर उनकी जान बचाई और उन्हें वेंटीलेटर पर रखा है।

देर रात उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई थी, जिसके बाद परिजनों और सहयोगियों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों की टीम लगातार उनकी सेहत पर नज़र रखे हुए है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने पिंटू जोशी के जल्द स्वस्थ होने की कामना की है। कांग्रेस के नेता दीपक पिंटू जोशी को शुक्रवार देर रात हार्ट अटैक आया। 42 वर्षीय कांग्रेस नेता पिंटू जोशी को तत्काल परिजन शेल्बी अस्पताल लेकर गए। डॉक्टर ने चेकअप किया और इसमें पाया कि एक नहीं बल्कि एक के बाद एक दो अटैक आए थे।

जानकारी के अनुसार चेस्ट पेन पर पिंटू रात दो बजे शेल्वी अस्पताल पहुंचे। फिर वहीं पर अटैक आ गया और हार्ट बीट चली गई। इस पर तत्काल डॉक्टरों ने सीपीआर दिया और जान बची। इसके बाद तत्काल उन्हें वेंटीलेटर पर शिफ्ट किया गया। जानकारी के अनुसार वह डॉक्टरों की निगरानी में हैं और उन्हें अभी भी सतर्कता के लिए वेंटीलेटर पर रखा गया है। डॉक्टर वेंटीलेटर पर ही लेकर एंजियोग्राफी करेंगे। ब्लॉकेज निकलने पर स्टेंट डाला जाएगा। मौके पर उनके चचेरे भाई और पूर्व विधायक अश्विन जोशी मौजूद हैं।

साल 2023 के विधानसभा चुनाव में पिंटू ने इंदौर विधानसभा तीन से चुनाव लड़ा था। इसमें बीजेपी नेता गोलू शुक्ला की जीत हुई थी। गोलू शुक्ला को 73 हजार और पिंटू को 58,624 वोट मिले थे। वह 14 हजार वोट से चुनाव हाटे थे। पिंटू दिग्गज कांग्रेस नेता स्वर्गीय महेश जोशी के पुत्र हैं।

मानव तस्करी के आरोप में 2 बदमाश पकड़ाए, महिला को रतलाम में बेचा

मुख्य आरोपी पहले से मानव तस्करी मामले में खाचरोद जेल में बंद

इंदौर। करीब सवा साल पहले इंदौर की महिला को डेढ़ लाख रुपए में रतलाम में बेच दिया था। मामले में राऊ पुलिस को दो आरोपियों की लंबे समय से तलाश थी। मशक्कत के बाद तीनों आरोपियों को मानव तस्करी के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। घटना 30 जून 2025 का है।

पुलिस को राऊ में रहने वाले युवक ने बताया कि उसकी पत्नी कुछ दिन से लापता हो गई है। कई बार उसे ढूंढा, लेकिन कहीं भी पता नहीं चल सका। पुलिस ने गुमशुदा का केस दर्ज कर लिया। इसके बाद महिला पुलिस को मिल गई, परन्तु उस समय उसने किसी भी घटना होने से इनकार किया। बाद में पुलिस और परिजनों की काउंसलिंग के दौरान महिला ने खुलासा किया कि उज्जैन रेलवे

स्टेशन पर उसकी मुलाकात मांगू बाई से हुई थी। मांगूबाई ने उसे विश्वास में लेकर अपने घर बुलाया और अपने बहन के बेटे जितेंद्र बारोड की मदद से महिला को दिनेश चौधरी निवासी ग्राम लूनी जिला रतलाम को डेढ़ लाख रुपए में बेच दिया था।

महिला की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों पर धारा 64(2)(ट), 87, 351(3) के तहत प्रकरण दर्ज किया गया, जिसमें बाद में धारा 145 बीएनएस भी जोड़ी गई। जांच के बाद पुलिस ने आरोपी दिनेश पिता भंवरलाल चौधरी निवासी ग्राम लूनी जिला रतलाम, जितेंद्र पिता मोहनलाल बारोड निवासी ग्राम कलसी नागदा जिला उज्जैन को पकड़ लिया। जबकि, मुख्य आरोपी मांगूबाई पहले से ही मानव तस्करी के अन्य प्रकरण में खाचरोद जेल में बंद है।

फर्जी दस्तावेजों से कृषि भूमि हड़पने वाले दो युवक गिरफ्तार, चार फरार

भूमि स्वामित्व को लेकर सिविल वाद के हल के पूर्व तथ्य छुपाए

इंदौर। भूमाफियाओं ने 3 करोड़ 62 लाख की कृषि भूमि फर्जी दस्तावेजों को आधार बनाकर हथिया लिया था। मामले में जमीन मालिक ने क्राइम ब्रांच को शिकायत की थी। शिकायत के जांच के बाद पुलिस ने दो आरोपियों को पकड़ लिया, जबकि आरोपियों के फरार चार आरोपियों की सरगर्मी से तलाश की जा रही है।

क्राइम ब्रांच के अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त राजेश दंडोतिया ने बताया कि फरियादी विशाल सिंह ने शिकायत आवेदन दिया था। इसमें आवेदक ने आरोपियों द्वारा फर्जी अनुबंध-फर्जी मानचित्र बनाकर करोंड़ों रुपए की जमीन की धोखाधड़ी कूटरचना और कब्जा करने की शिकायत की थी। इसके बाद जांच में पुलिस ने पाया कि आरोपियों ने संगमत होकर भूमि के संबंध में भूमि स्वामित्व को लेकर सिविल वाद के निराकरण के पूर्व ही समस्त तथ्य छुपा लिए। इसके बाद कूटरचित अनुबंध पत्रों एवं फर्जी कॉलोनी मय नक्शा तैयार किया।

किसी अन्य युवक को जमीन बेचकर उसकी फर्जी रजिस्ट्री कराते हुए रुपए हासिल कर लिए। जांच के बाद पुलिस ने आरोपी प्रवीण सिसोदिया और प्रवीण पिता पूनमचंद को धारा 318 (4), 340 (2), 336 (3), 338, 61 (2), 3 (5) में गिरफ्तार कर लिया है।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मास्टरजी और हाज़िरी का जिन्न

आ हाज़िरीपुर नाम के गाँव में सुबह का सूरज पहले ब्लैकबोर्ड पर नहीं, मोबाइल स्क्रीन पर उगता है–अटेंडेंस-ऐप की खिड़की जितनी देर खुली रहे, शिक्षा की खिड़की उतनी देर खुली मानी जाती है. मास्टरजी अब चॉक से कम, पावर बैंक से ज़्यादा पढ़ाते हैं; कंधे पर हाजिरी-थैला, जेब में आँसू-पोंछ रुमाल, और होठों पर वही पहाड़ी भजन–हे नेटदेव! आज कृपा करना. स्कूल के गेट पर बच्चे टिटिहरी की तरह गर्दन तिरछी करके सेल्फी की मुद्रा सीख रहे हैं–सर, रौशनी चेहरे पर ऐसे रखिए, जैसे ज्ञान पड़ता हो. मास्टरजी कैमरे को देखकर मुस्कुराते हैं, ऐप कहता है–फेस नॉट क्लियर, आत्मा लोकेशन से बाहर. उधर ब्लैकबोर्ड रूठी दुल्हन की तरह देख रहा–मेरा कोई फोटो नहीं खींचता. कक्षा में पहला सवाल आजकल यही होता है–लॉगिन हो गया? और पहला उत्तर–सर, नेटवर्क ने आज संस्कृत ले ली है. पढ़ाई इंतज़ार में है; इंतज़ार के भी दाँत निकल आए हैं।

गाँव की सोनम बिटिया के घर में स्मार्टफोन है, मगर मालिक डेटा साहब हैं–अर्थात् पिता जी. छात्रवृत्ति का ओटीपी मामा के नंबर पर जाता है, जो परसों बारात में गये थे और आज भी नाच रहे हैं. सोनम चप्पल के पट्टे से फोन का कवर बाँधकर सीएससी सेंटर पहुँची–काउंटर पर साहब ने मुहाँसा तोड़ा और बोले–बिटिया, सर्वर नाराज़ है, एक समोसा खिला दो, शायद मना जाए. बिटिया ने आँखों से समोसा तल दिया; साहब ने कीबोर्ड पर नमक छिड़का और बोले–अब देखो जादू. स्क्रीन ने गर्दन घुमाई, टिकट बना, अंकुर नहीं फूटा. सोनम बोली–सर, पढ़ना चाहती हूँ. स्क्रीन ने उत्तर में सीटी बजाई–कृपया पुनः प्रयास करें. गाँव का कुआँ भी इतना रूखा नहीं होता, जितना ये हेल्पडेस्क हैं–बकेट डुबो दे, तो कम-से-कम रसीद-सा पानी आ ही जाता है।

निरीक्षण-दिवस का अपना सिंगार होता है. सुबह-सुबह स्कूल में चूना ऐसे फेंटते हैं जैसे गरीबी की दीवार पर सफेद झूठ लिख रहे हों. दीवार पर पढ़ो भारत, बढ़ो भारत नया-नया चमकता है और शौचालय के भीतर मेंढक तालसेना की परेड करते हैं. कलेक्टर साहब का काफिला दूर से दिखते ही प्रधानजी ने डैशबोर्ड महाराज की आरती उतारी–स्क्रीन की ब्राइटनेस 100, दिल की धड़कन 40. अधीनस्थ ने फुसफुसाया–साहब, लाल आ रहा। ऊपर से आदेश–गाँव हरा कर दो. लड़का फट से टॉर्च जलाता है, स्क्रीन पर रोशनी पड़ते ही आँकड़े हरे हो जाते हैं, जैसे सर्दी में भीरु सूरज से हरी मटर पक गई हो. कलेक्टर साहब मुस्कुरा दिए–बहुत प्रगति. मास्टरजी ने मन-ही-मन सोचा–हरे-भरे आँकड़े, फटी-पुरानी कॉपियाँ; उधर रिपोर्ट का पेट तृप्त, इधर बच्चों का पेट पूछता है–आज मिड-डे में क्या है? रंग बदलने की यह अलकेमी इतनी सहज है कि नीति के प्रवचन भी शर्म से ब्लश कर लेते हैं।

वेंडर बाबू नई इत्र की कमीज़ में आए, गले में 'अपटाइम' की माला, माथे पर 'नवाचार' का टीका. बोले– हमारा सर्वर 99.99 प्रतिशत गाँव की बिजली ने दाँत निपोरे और हवा ने खिड़की पटक दी. मास्टरजी ने पूछा–जुर्माना? वेंडर बाबू मुस्कुराए–जुर्माना तो हमसे प्यार करता है, पर मिलने कम आता है. उधर वेतन से अनुपस्थिति कटे जैसे बचत से भरोसा कटता हो; इधर अनुबंध से जिम्मेदारी ऐसे गायब, जैसे डेडलाइन से ईमान. नियमों का शेर वही है जो कक्षा के बाहर दहाड़ता है–अंदर आते ही बिल्ली बन जाता है. वेंडर बाबू बोले–अपडेट कीजिए. मास्टरजी ने मुस्कुरा कर कहा–बच्चों की किताबें भी अपडेट हो जाएँ तो? जवाब आया–वो अगली तिमाही. इस देश में 'अगली तिमाही' टालमटोल का नाम-रूपी गटर है, जिसमें नीति अपने पाँव धोकर प्रशस्ति गाती है।

शौचालय की मुस्कान सबसे सजीव कला है. फ़्रेम देखिए–रिबन, गुब्बारे, सेल्फी, और पीछे एक बाल्टी की एकाकी साधना. बच्चों ने इसे फोटो-घर नाम दे दिया है–यह वही घर है, जहाँ फोटो होते हैं, लोग नहीं. पानी पिलाकर टंकी का पेट भरने की बजाय, टंकी पर 'सेल्फी-पॉइंट' लिख दिया गया है. कहीं लिखा–स्वच्छता मेरा अधिकार, भीतर से आवाज़–कम-से-कम नल मेरा भी कर दो. फोटो में मुस्कान इतनी उजली कि फोटोग्राफर की आत्मा भी उज्जवल, और भूमि-तल पर गन्दगी इतनी सच्ची कि सच का मुँह धोना पड़े. बच्चों ने नया खेल खोजा–जियो-टैग पकड़म-पकड़ाई–शिक्षक पूछे–होमवर्क? बच्चों का उत्तर–÷सर, फोटो होगा तो होमवर्क देंगे. कक्षा के बाहर दुनिया कैमरे में घुस चुकी है; कक्षा के भीतर किताब अब भी बाहर खड़ी है।

डेटा लालाजी गाँव के नए साहूकार हैं–सूचियाँ उनकी, सूचनाएँ उनका गल्ला. गोपनीयता का परदा इतना पतला कि पीछे रखी कुर्सी के बोल्ट तक दिख जाएँ, और शिकायत करिए तो जवाब÷स्क्रीनशॉट हटाइए, यह अनुचित है. चोरी करे तो अदृश्य-स्याही, चोर पकड़े तो नागरिक का हाथ. डेटा लालाजी ने नया दुक्खा शुरू किया है–फीडबैक. जो बोले, उसे आशीर्वाद–आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए महत्वपूर्ण है; जो पूछे–कैसे ठीक होगा? उसे प्रतिज्ञा–कृपया पुनः प्रयास करें. कल जो चिट्ठी लिखकर जाता था, आज 'टिकट' बनकर घूमता है; पहले किया देर करता था, अब सिस्टम. फर्क सिर्फ इतना कि पहले चिट्ठी मिल भी जाती थी; अब टिकट भी 'क्लोज्ड' हो जाता है, समाधान खुले में सोता रह जाता है।

मीटिंग का स्वाद पीपीटी-भुने बादाम जैसा है–खाया भी और माना भी. लक्ष्यों के नाम बदलते हैं, समय-सीमा खिसकती है, पर तालियाँ स्थिर रहती हैं–वे नीति के जन्म से जुड़ी सरकारी धातु हैं, कभी पुरानी नहीं होतीं. पायलट सफल का नारा इतना सफल है कि उड़ान ही ख़त्म नहीं होती; यात्री पैदल चले जा रहे, पर 'एयर शो' की तारीफ़ हर महीने. विफलता को 'सीखी हुई शिक्षा' में बदलना कला है–हम असफल नहीं हुए, हमने जान लिया कि यह रास्ता भी असफल होता है. अहा! अगर इसी चालाकी से कक्षा तीन की गणित सिखा दी जाए, तो तालियाँ स्कूल की दीवारें हिला दें. मगर अंदर की हवा अब भी ट्यूशन की खिड़की से आती है; स्कूल की खिड़कियाँ रिपोर्ट की हवा से चलती हैं–जो ऊपर से नीचे नहीं आती।

अब एक किस्सा पक्का–तीसरी कक्षा का राजू, जो भाग के सवाल में भागता था. मास्टरजी ने चॉक से पाइपलाइन खींची, बोला–तुम टंकी हो, तुम नल हो, तुम घड़ा. बच्चे हँस पड़े, मस्ती में हिसाब उतर आया. तभी फोन की घंटी–सर, लोकेशन के साथ फोटो भेजिए कि कक्षा चल रही है. मास्टरजी ने फोटो खींचा–राजू का चेहरा धुँधला, ब्लैकबोर्ड कटा, खुद का माफ़ी-लायक एंगल. जवाब मिला–फेस नॉट डिटेक्टेड. कक्षा में ज्ञान डिटेक्ट हो गया, पर सिस्टम को चेहरा चाहिए था, सीखना नहीं. राजू ने धीरे से कहा–सर, अगर सिस्टम को पढ़ना होता, तो यह भी पास हो जाता. मास्टरजी अंदर ही अंदर मुस्कुराए; यह वह मुस्कान थी, जो किसी ऐप में 'कैप्चर' नहीं होती।

पंचायत बैठी–मचार के नीचे, नीम का साया, बीच में एक पुराना रेडियो जो अब भी देशगान गाता है. फ़रमान निकला–जो देर से आए, वह दोषी नहीं; जो देर से लाए, वह दोषी–बिजली देर से आई, नेटवर्क कहीं और गया, सर्वर छुट्टी पर–तो जुर्माना किसके माथे? दीवार पर चूने से लिखा–सिस्टम की हर असुविधा पर नागरिक नहीं, सिस्टम जिम्मेदार. ग्राम सचिव ने हौले से जोड़ा–ठेकेदार की रकम में से जुर्माना काटना शुरू करिए, फोटो की जगह स्थिति लिखिए, और रिपोर्ट की जगह नागरिक की कसम. प्रधानजी ने तर्ज़ पर लाठी बजाई–डैशबोर्ड महाराज अब गाँव आकर परीक्षा देंगे–छह प्रश्न, छह उत्तर; तभी अगला भुगतान. रामखेलावन ने दबी आवाज़ में जोड़ा–और हरा रंग तभी लगेगा जब कक्षा की खिड़की से हवा आए, स्क्रीन से नहीं. यह गाँव का कानून था–लगता तो खिलौना-सा, पर भीतर लोहे का पिघला हुआ सत्य।

एक दिन बिजली चली गई–पूरे जिले में. कलेक्टर साहब की मीटिंग अँधेरे में घुल गई; वेंडर बाबू का अपटाइम बैटरी पर बैठकर राम-नाम जपने लगा; डैशबोर्ड महाराज का मुँह काला हो गया–किसी ने कालिख नहीं पोती थी, रौशनी चली गई थी बस. उसी अँधेरे में मास्टरजी ने बच्चों को कहानी सुनाई–एक राजा था, जिसके पास एक डैशबोर्ड था; वह जितनी बार देखता, प्रजा उतनी ही खुश दिखती; एक दिन बिजली गई, तो राजा ने पहली बार लोगों का चेहरा देखा. बच्चे ताली बजाते-बजाते अचानक रुक गये, जैसे समझ गए हों कि ताली किसी और को बजनी चाहिए. रौशनी आई, स्क्रीनें जागीं, आदेश लौटे–कृपया पुनः प्रयास करें. मास्टरजी ने चॉक उठाई और ब्लैकबोर्ड पर धीरे-धीरे लिखा–शिक्षा = मनुष्य. कोई ऐप इसका चेहरा नहीं पहचान पाया।

कविता

बच्चे नहीं सुख मर गया है

शेफ़ाली शर्मा

सुख का चेहरा होता है
लाल सूर्य जैसा चमकदार
आवाज़ होती है
पूरी ताकत से रोते बच्चे की आवाज़

बच्चे नहीं
सुख मर गया है
न दिखाई देता है न सुनाई
दफ़न है कोयला बन जाने को
कोयलांचल की धरती में
दफ़न है माँ और पिता भी
लौट आए हैं स्त्री और पुरुष
घिरे बैठे हैं बेजान दीवारों से
बच्चे नहीं उनका घर मर गया है

जब अखबार से गायब हो जाएंगी खबरें
पक्ष और विपक्ष थक चुका होगा
रुक जाएंगी बेमतलब की जाँचे और गिरफ्तारियाँ
मुआवज़ा खातों में जा चुका होगा
सोशल मीडिया दिखाने लगेगा कोई और घटना
घटना की तरह भुला दी जाएगी बच्चों की मृत्यु

उसी दिन के लिए लिख रही हूँ यह कविता
कि हमें याद रहे
हम ने कितने सुखों की हत्या कर डाली
जहाँ कोई हत्यारा नहीं
वहाँ हर एक हत्यारा है।

राजकुमार कुम्भज की तीन कविताएं

1.ज़िंदगी ज़िंदाबाद

ज़िंदगी ज़िंदाबाद
खुला खेल है एक शतरँज का
किन्तु है शायद ग़लत अवधारणा भी
वज़ीर और ज़मीर का खेल नहीं है ज़िंदगी
जीत सकता है पैदल सिपाही भी
हार सकते हैं,हार ही सकते हैं राजाजी
राजाजी के मंत्री-संत्री-यंत्रीगण
और राजाजी के तोपची तक भी
कई-कई मोड़ हैं,जोड़-तोड़ हैं इसमें
नहीं हैं,सीधे रास्ते ही नहीं हैं सिर्फ़
अगर मान भी लें कि ऐसा-ऐसा होता
तो फिर ये संसार कैसा होता?
खुला आसमान नहीं होता कहीं भी
ज़मानेभर में कहीं भी होता नहीं पिंजरा
मैं होता नहीं परिंदा ।

2.कठिन थे अक्षर

चोर आए घर मेरे भी
कुछ गहने,कुछ कपड़े,कुछ बर्तन-भॉडे
ले गए बॉधकर गठरी सिर ऊपर
छोड़ गए चिंतातुर-चिंताकुल कविता?
कविताओं की क़िताबें छोड़ गए
जिनमें छुपा रक्खा था,दबा रक्खा था मैंने
अपना और अपने घर-भर का सुख-दुःख
कुछ पत्र थे,कुछ प्रेम-पत्र, कुछ प्रेम-प्रश्न भी
और कुछ ऐसा-वैसा ही कुछ दूसरा भी
वह सब जो बनाता रहता था मुझे
हमेशा-हमेशा प्रश्नानुसार-प्रश्नाकुल जैसा
वह सब, वह सब छोड़ गये चोर
उनके लिए सरल था चुराना आभूषण
निहायत कठिन थे अक्षर।

3.मुझे बताता है एक बच्चा

एक बच्चे से पूछा मैंने
क्या कुछ जानते हो गॅगा के बारे में
बड़ी मासूमियत से बोला वह एक बच्चा
सुबह-सवेरे रोज़-रोज़ ही
घर आती है, मुझे जगाती है गॅगा

फिर झाड़ू-पोछा करती है भूखे ही
और मॉजती है ढ़ेर सारे जूठे बर्तन
गंदे कपड़े भी मेरे धोती है वह खुशी-खुशी
कभी-कभी यहीं किसी कोने में सो जाती है
कुछ इसी तरह फिर खो जाती है गॅगा
खॅगालते हुए,धोते हुए मन-ऑगन
सपनों में सुखाते हुए सपने अपने
कुछ खोते हुए,कुछ खोजते हुए
शून्य में शून्य की ओर ताकते हुए
मुझे बताता है एक बच्चा।

स्मार्ट मीटर नहीं,अमला है स्मार्ट

कटाक्ष

मोहन वर्मा
लेखक पत्रकार हैं।

आजकल हर कहीं विद्युत वितरण कम्पनी और उपभोक्ताओं के बीच का एक बड़ा मामला है स्मार्ट मीटर । पिछले कुछ समय से बिजली चोरी और उपभोक्ताओं से बिजली बिल की वसूली में नाकाम विद्युत वितरण कम्पनी एक अच्छे सेल्समैन की तरह स्मार्ट मीटर खपाने में लगी है अगर कहा जाये कि स्मार्ट मीटर नहीं - अमला है स्मार्ट तो कुछ गलत नहीं होगा ।

पहले बात करें स्मार्ट अमले की जो स्मार्ट मीटर को खपाने के लिए साम दाम दण्ड भेद सभी तरीके अपनाकर कमजोर उपभोक्ताओं को अपना निशाना बनाकर अपना टार्गेट पूरा करने में लगा है । बड़े उपभोक्ताओं और दबंगों से बिजली बिल की वसूली में और बिजली चोरों पर शिकंजा कसने में नाकाम ये अमला स्मार्ट मीटर के कसीदे पढ़ते हुए इसे जबरिया थोपने में लगा है ।

विद्युत वितरण कम्पनी के अधिकारियों की माने तो स्मार्ट मीटर के लगने से घर पर मीटर रीडर के आने और रीडिंग की झंझट से उपभोक्ताओं को मुक्ति मिलेगी । वास्तविक खपत और लोड की जानकारी के साथ ऑनलाइन बिलिंग से घर बैठे भुगतान सुविधा का लाभ मिलेगा । किस समय कौन सा उपकरण चलाया और क्या खपत रही जाना जा सकेगा और ये मीटर हर पंद्रह मिनिट का डाटा अपडेट करता रहेगा । उपभोक्ताओं को खपत के आधार पर दिन में 9 से 5 तक उपभोग की गई बिजली पर 20 प्रतिशत की छूट भी मिलेगी । विभाग अब तक 16 जिलों में 03 लाख 90 हजार मीटर लगा चुका है।

स्मार्ट मीटर की तारीफ में कसीदे पढ़ने वाले अमले के लोग वास्तविक परेशानियों से दो दो हाथ करते उपभोक्ताओं के भागते मीटर, कटती जेब और परेशानियों से कन्नी काटते नजर आते है। कमजोर उपभोक्ता पर जबरिया स्मार्ट मीटर थोपते ताकतवर विरोध करने वालों के यहां से उल्टे पैर लौट आते है । किसी कारण ऑनलाइन बिल भरने में एक दो दिन की भी देरी से तुरंत लाईन काटकर पेनल्टी लगाने पर स्मार्ट अमले के पास कोई जवाब नहीं मिलता ।

शहर के दो तीन उदाहरण देखिये। स्मार्ट मीटर की शर्तों और कायदों के हिसाब से सरकारी स्कूलों में इसे लगाया जाना जरूरी नहीं है क्योंकि वहाँ सभी स्कूलों के बिलों का भुगतान साल मे एक बार विभाग करता है और स्कूलों में स्मार्ट टीवी के माध्यम से पढ़ाई करवाई जाती है

अब एक सरकारी स्कूल में जबरिया स्मार्ट मीटर लगाने की जिद और न लगाने पर बिजली काटने का मामला सामने आया । समाजसेवियों और मीडिया द्वारा मामला सामने लाने के कारण तकरीबन एक माह बाद कनेक्शन दोबारा जोड़ा गया । जानकारी के अनुसार दो तीन स्कूलों के कनेक्शन स्मार्ट मीटर लगाने की जिद के कारण अब फिर काटे गये है ।

एक निज़ी बैंक का कनेक्शन बिल के दो तीन दिन बकाया होने के कारण काट दिया गया जबकि नियमित समय पर भुगतान करने वाले बैंककर्मियों द्वारा छुट्टियों के कारण और एचओ से अप्रूवल के कारण हुए इस विलंब से स्मार्ट अमले को अवगत करवाकर एक दो दिन का समय देने की गुहार भी की गई मग़र स्मार्ट अमले के अपने ही बनाये कानून के कारण बैंक का कामकाज कुछ समय तक बिना विद्युत के संचालित करना पड़ा ।

आप हम जैसे कई उपभोक्ता रोजाना विद्युत मंडल में पेनल्टी भरकर अपना काटा गया कनेक्शनजुड़वाने

पहुंचते देखे जा सकते है । ये भी समझ से बाहर है कि डिजिटलायजेशन के इस स्मार्टनेस में यदि उपभोक्ता द्वारा ऑनलाइन भुगतान कर रहे है तो फिर कनेक्शन जुड़वाने लाईन में क्यों खड़ा होना पड रहा है ?

प्रसंगवश कहें तो आये दिन अघोषित रूप से कभी भी किसी भी कारण से हो रही बिजली कटौती के नाम पर रोते उपभोक्ता की परेशानी सुनने- समझने को कोई अधिकारी तैयार नहीं है । अब कोई कहे आम उपभोक्ता करे तो क्या करे और जाये तो कहाँ जाये..।

प्रेम की सफलता-असफलता, पीड़ा, वियोग की कहानियां

पुस्तक समीक्षा

दीपक गिरकर
समीक्षक

पच्चीसवां प्रेम पत्र आभा श्रीवास्तव का तीसरा कहानी संग्रह है। इनकी रचनाएँ निरंतर देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इस संग्रह में प्रेम के सूत्र में बंधी और प्रेम रस में घुली 20 कहानियाँ संग्रहीत हैं। आभा श्रीवास्तव ने स्त्री विमर्श के विविध आयामों को काली बकसिया तथा दिसम्बर संजोग संग्रहों की कहानियों के माध्यम से सफलतापूर्वक हमारे सामने प्रस्तुत किया था। आभा श्रीवास्तव का तीसरा कहानी पच्चीसवां प्रेम पत्र स्त्री जीवन, प्रेम और सामाजिक यथार्थ का संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करता है। कहानियाँ प्रेम की सफलता-असफलता, पीड़ा, वियोग और जीवन की अनिश्चितताओं से भरी हैं।

संग्रह की पहली कहानी दोहरा पाप एक रहस्य और संवेदना से भरी एक ऐसी कहानी है जो पाठक को अपने भीतर कहीं गहरे तक ले जाती है। यह एक ऐसे लोक की यात्रा है जहां दृश्य और अदृश्य शक्तियाँ एक साथ सांस लेती हैं। तीन सहेलियाँ बत्तीस वर्षों बाद अपने आप से मिलने, अपने जीवन की परतों को समझने और कुछ खोए हुए हिस्सों को फिर से छूने की चाह में नौगढ़ की यात्रा करती हैं। बिहार और नेपाल की सीमा पर बसे एक पुराने डाकबंगले में वे ठहरती हैं, जहाँ रात के सन्नाटे को चीरती बिरहा की आवाजें, चांदनी रात में गूंजती बाँसुरी की धुनें और कमरे में तैरती इत्र की रहस्यमयी खुशबू, उन्हें किसी और ही दुनिया में ले जाती हैं। इस गहन वातावरण में भाग्यश्री अपने खोए हुए प्रेम सोहम की स्मृतियों में डूबती जाती है। उसे उसका आभास होने लगता है मानो वह कहीं आस-पास ही हो। पर क्या यह केवल उसकी कल्पना है? या कुछ ऐसा जो वास्तविकता की सीमाओं से परे है? यही द्वंद्व, यथार्थ और अलौकिक के बीच की झिलमिलाती रेखा इस कहानी की सबसे बड़ी शक्ति है। यह कहानी कहीं-कहीं अविश्वसनीय सी लगती है, पर जिस विश्वास, खूबसूरती और संवेदनशीलता से इसे रचा गया है, वह पाठक को किसी हिमाच्छादित बादलों में बनती आकृतियों की तरह सम्मोहित कर लेता है। यह कहानी आपको लौकिक और पारलौकिक की लहरों में डोलने को मजबूर करती है।

कहानी 'चैताली' समाज में स्त्री के बाह्य रूप और उसकी प्रतिभा के बीच होने वाले भेदभाव को उजागर करती है। चैताली का गायन नायक को मंत्रमुग्ध कर देता है, पर जब उसकी कल्पना यथार्थ से टकराती है, यानी जब वह उसके रूप से परिचित होता है, तो उसका आकर्षण टूट जाता है। यह टूटन सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की मानसिकता का प्रतीक है जो स्त्री के सौंदर्य को उसके व्यक्तित्व से ऊपर रखता है। कहानी यह प्रश्न उठाती है कि क्या स्त्री की पहचान केवल उसके रूप में सीमित है? क्या उसकी कला, संवेदना और आत्मा का कोई मूल्य नहीं?

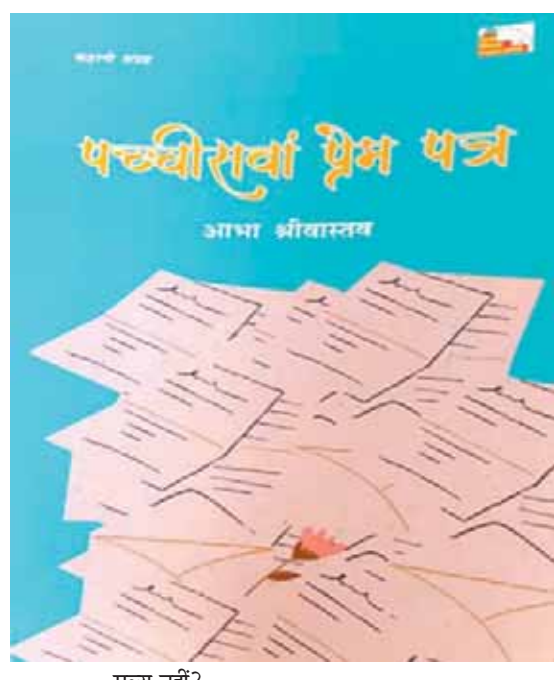

'राम मिलाई जोड़ी', 'सोलह दूनी तैंतीस', 'कहो तो कहानी कहूँ', 'जवा', 'जेते जेते पाथे', तुमसे मिलकर , लेडीज छाता, आईना मुझसे मेरी पहली सी सूरत माँगे इत्यादि कहानियाँ प्रेम की सफलता-असफलता, पीड़ा, दुख व त्रासदी के संयोगों से भरी हुई हैं। कथाकार ने जीवन के संयोगों और परिस्थितियों के माध्यम से यह दिखाया है कि प्रेम केवल रोमांस नहीं, बल्कि भावनात्मक संघर्ष और संवेदनाओं का जटिल मिश्रण है। पात्रों की अनुभूतियाँ पाठक के मन को छूती हैं और यह अनुभव कराती हैं कि जीवन में प्रेम का मार्ग हमेशा सरल और सीधा नहीं होता।

आभा श्रीवास्तव की कहानियाँ नारी जीवन के विविध पहलुओं और यथार्थताओं को अपनी संवेदनशील दृष्टि से उजागर करती हैं। उनके पात्र और परिवेश हमारे आस-पास की दुनिया से बहुत सजीव और परिचित प्रतीत होते हैं। लेखिका अपने समाज और समय की सच्चाइयों को निष्पक्ष और वास्तविक रूप में प्रस्तुत करती हैं, जिससे कथ्य और अभिव्यक्ति दोनों में गहराई आती है। कहानियाँ घटना प्रधान हैं, पात्र अपनी अनुभूतियों को सहजता से व्यक्त करते हैं और संवाद सरल एवं स्पष्ट हैं। पात्र आंतरिक संघर्ष, आत्म-सम्मान और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रतीक हैं। लेखिका की सरल, स्पष्ट और संवादप्रधान भाषा घटनाओं और पात्रों को जीवंत बनाती है। यह संग्रह न केवल प्रेम और वियोग की मार्मिक दास्तान है, बल्कि स्त्री की अस्मिता, संवेदनशीलता और संघर्ष की कहानियाँ भी पेश करता है। आभा श्रीवास्तव ने जीवन के सभी रंग और भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से कथानक में पिरोया है। इस संग्रह की कहानियों में पारिवारिक और सामाजिक परतों का अनावरण होता है, जिससे स्त्री के अनुभव, पीड़ा, भावनात्मक संघर्ष और संवेदनाओं के जटिल मिश्रण का अनुभव होता है। आभा श्रीवास्तव एक सशक्त और रोचक कहानी संग्रह रचने के लिए बधाई की पात्र हैं। आशा है इस कहानी संग्रह का साहित्य जगत में स्वागत होगा।

पुस्तक - पच्चीसवां प्रेम पत्र (कहानी संग्रह)
लेखिका -आभा श्रीवास्तव
प्रकाशक -न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य - 250/- रूपए

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कलाकार सुनील विश्वकर्मा और यथार्थ कृतियां

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मैं और बस मैं की हवा चल रही हो जैसे। गांव के धूल भरी गलियों के, हंसी ठिठोलियों के बीच स्कूल जाने से भी पूर्व यानी गदहिया गोल में भी नाम लिखे जाने से पूर्व कलाकृतियां बनाने वाले बालक सुनील विश्वकर्मा जो आज डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाये हुए हैं, कला को लेकर इसी अमूर्तन और यथार्थ के बीच उठे उहापोह में पिस रहे थे लेकिन गांव की महक कहें या बचपन के संस्कार और गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी द्वारा दी गई शिक्षा का असर कि सुनील जी यथार्थता की तरफ ही बढ़े और इस तरह बढ़ें कि कृतियों में भव्यता अपने पूरे वजन के साथ उपस्थित हुई है। दिव्यता हर कृतियों में हैं और फिर वो चाहे रंग में हो, रेखा में हो या फिर आकृतियों में। सृजन रग-रग में बसा है आपके। यथार्थ के नजदीक आप शुरू से ही रहे हैं। वस्तुओं, परिस्थितियों, समाज एवं संस्कार को अच्छे से महसूस करते हैं आप, जो कृतियों में स्पष्टतः झलकती भी है।

संक्रमण का दौर हो, खुद को बचा सकने हेतु जद्दोजहद जारी हो पर बच ही जाना है, संशय है। बात कला की है और कला में भी अमूर्तन और यथार्थ के बीच के द्वंद्व की। अमूर्त कृतियों के बल पर वैश्विक स्तर पर परचम रातों-रात लहराया जा सकता है जबकि यथार्थ का कोई भविष्य ही नहीं..., ना ना ना कौन कहता है? मैं तो कहता हूं यथार्थ हमेशा था और यथार्थ हमेशा-हमेशा रहेगा...। दौर ऐसा ही है, खुद को छोड़ कर बाकी की कृतियां कला नहीं है, लगभग हर कलाकार यही सोचने लगा है, कुछ अपवाद भी हैं। मैं और बस मैं की हवा चल रही हो जैसे। गांव के धूल भरी गलियों के, हंसी ठिठोलियों के बीच स्कूल जाने से भी पूर्व यानी गदहिया गोल में भी नाम लिखे जाने से पूर्व कलाकृतियां बनाने वाले बालक सुनील विश्वकर्मा जो आज डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाये हुए हैं, कला को लेकर इसी अमूर्तन और यथार्थ के बीच उठे उहापोह में पिस रहे थे लेकिन गांव की महक कहें या बचपन के संस्कार और गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी द्वारा दी गई शिक्षा का असर कि सुनील जी यथार्थता की तरफ ही बढ़े और इस तरह बढ़ें कि कृतियों में भव्यता अपने पूरे वजन के साथ उपस्थित हुई है। दिव्यता हर कृतियों में हैं और फिर वो चाहे रंग में हो, रेखा में हो या फिर आकृतियों में। सृजन रग-रग में बसा है आपके। यथार्थ के नजदीक आप शुरू से ही रहे हैं। वस्तुओं, परिस्थितियों, समाज एवं संस्कार को अच्छे से महसूस करते हैं आप, जो कृतियों में स्पष्टत- झलकती भी है। पिता जी का पूरा सहयोग रहा, यहां तक कि जितने चित्र बनाते उतनी बार कुछ खाने या खरीदने हेतु पैसा भी आपको पिता जी के तरफ से मिलता था, लोहे पर, लकड़ी पर कभी राम, कभी गणेश जी को बनाया करते थे, कभी-कभी तो एक ही दिन में पूरी कॉपी, जो बीस-तीस पृष्ठों की होती थी भर जाती थी। हौंसला बढ़ता था जबकि बड़े भैया चाहते थे कि भाई हमारा डॉक्टर बने, गांव में लगभग सभी यही चाहते हैं। रंग और ब्रश गांव में बढ़िया वाले नहीं मिलने पर आप अधिकतर रेखांकन ही किया करते थे जो आगे चलकर बहुत काम आई। गांवों में शादियों या और त्योहारों में दीवारों पर चित्र बनाने का रिवाज रहा है गुरू विश्वनाथ त्रिपाठी जी को बुलाया जाता था, जो बिना पेंसिल के कितना भी बड़ा म्यूरल हो सीधे ब्रश से बनाया करते थे, गजब का कमांड था उनका। जहां सीखने हेतु बालक सुनील भी जाते थे, विश्वनाथ त्रिपाठी आपके पहले गुरू रहे हैं। दीवारों पर काम करने के बाद घर आकर किसी कोने में छिप कर खुद चित्र बनाना आपकी आदत हो गई, छिपने का कारण मां रहीं, मां को ये सब पसंद नहीं था हालांकि बाद में विचार बदल गये। आपके चित्र भी पसंद किए जाने लगे, लोग आपको भी बुलाने लगे शादियों त्योहारों में। कई दीवारें आपके सृजन से सुंदर दिखने लगीं, जगह-जगह आपका नाम दिखने लगा। ये सब ऐसे ही चलता रहा असली बदलाव हुआ वरिष्ठ कलाकार वासुदेव कामथ जी के पत्र से। बालक सुनील का बनाया चित्र कोई खरीदा था और वो ले जाकर कामथ जी को उपहार स्वरूप भेंट कर दिया। कामथ जी ने लिखा- आपके चित्र मैंने देखे, बहुत ही सुन्दर हैं, आप आगे बहुत कुछ कर सकते हो, संभव हो तो ललित कला की पढ़ाई करो। जीव विज्ञान से पढ़ाई कर रहे छात्र को तब तक ये नहीं पता था कि केवल और केवल कला की भी पढ़ाई होती है। अब तक दूसरे बोझिल विषयों से जूझ रहे मन में खुशी कई गुना बढ़ गई, हौसलों में कई पंख एक साथ जुड़ गये और उड़ने को बेताब रहने लगा युवा मन। पहले ही प्रयास में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग में दाखिला मिल गया।

हरे-भरे परिवेश में आपकी कृतियां फलने-फूलने लगी। परिसर में आधुनिकता के नाम पर बन रही अमूर्त कृतियां कभी-कभी विचलित करती थीं कि बाकी सब तो अमूर्त बना रहे हैं, यथार्थ के नाव पर सफर कैसा होगा? आदि-आदि, पर आप भारतीयता पर अडिग रहे, अपने लक्ष्य को लेकर अडिग रहे और टिके रहे अपने विचारों पर। रेखांकन में निरंतरता बनी रही, धीरे-धीरे विश्वास ने काम करना शुरू किया और आपको स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। गांव घर जिले के जो लोग सोचते थे कि पेंटिंग सीख कर वापस यहीं आकर एक गुमटी खोलेंगे और नंबर प्लेट वगैरह बना कर कमाई करेंगे, के विचार बदले और आपके यहां से कई युवा एक साथ इस तरफ झुके और आज मऊ का कोपागंज कला का गढ़ बना हुआ है।

छोटे से कस्बे कोपागंज से होते हुए वैश्विक स्तर तक का सफर आसानी से भले ही प्राप्त हो गया हो पर फॉर्म वगैरह भरना बड़ा भारी काम लगता था वैसे भी कलाकारों को कागजी कामों में मजा कहां? एम.एफ.ए के बाद किसी मित्र ने चाइनीज स्कॉलरशिप हेतु आपका फार्म भर दिया, चयन भी हो गया, मजे की बात देखिए कि पहली बार दिल्ली की यात्रा तब हुई जब आपको चाइना जाना था। लगातार दो वर्षों तक वहां के कला को सीखने समझने का मौका मिला, राइस पेपर पर पेन इंक से काम वहां की विशेषता है। डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा कहते हैं कि मैं चाइना में सुबह पांच बजे उठ जाता था रात के दो-दो बजे तक काम किया करता था, मुझे सीखने में बड़ा मजा आता था। मुझे माध्यम प्रभावित नहीं कर पाता क्योंकि मुझे पता है कि बनाना तो चित्र है, चित्र की बारीकियां मुझे आनी चाहिए माध्यम कोई हो। हो सकता है एक बार माध्यम समझ में ना आए लेकिन चार से छः बार के बाद माध्यम की जो विशेषता होगी उसको पकड़ लेने पर आप चित्र बना लेंगे, चित्र की समझ आपको होनी चाहिए। चाइना में लगभग तीन महीने बाद मैं एक चित्र बनाकर सर के पास ले गया उन्होंने कहा कि इतनी जल्दी कैसे सीख गए? मेरा जवाब था कि मैं अपने यहां से मास्टर करके आया हूं चित्र बनाना मुझे आता है, सिर्फ माध्यम सीखना है जो मैं सीख गया। वहां मैंने लगभग 600 पेंटिंग बनाई। चाइना में निर्मित आपके चित्रों को संस्कार भारती द्वारा यहां के कई विश्वविद्यालयों एवं गैलरियों में प्रर्दशित किया गया, डेमोंस्ट्रेशन के कार्यक्रम भी रखे गये, जिले स्तर पर भी आपके कार्यक्रम रखे गये। जल्द ही आपको सेंट्रल हिंदू बॉयज स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गई। निरंतरता यहां भी बनी रही और लगभग पांच साल यहां पढ़ाने के बाद महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में आपका चयन हो गया। आज आप वहां विभागाध्यक्ष हैं, बच्चों को कला के तमाम बारीकियों से परिचित करा रहे हैं। आपके सिखाए छात्र अच्छे पदों पर हैं। आपके काम लखनऊ के अंबेडकर पार्क सहित कई विशेष जगहों में भी प्रदर्शित हैं। आपके कृतियों में यथार्थता और अपने लोक के साथ बनारस है, वहां का परिवेश है, महक है, पर्व है, झांकियां हैं, घाट, साधू, नाव, सीढ़ियां हैं, रामनगर और वहां का इतिहास है। धार्मिक ग्रंथों से ली गई कहानियां हैं और इन सभी के साथ कृतियों में भव्यता है कारण आपके यहां परिप्रेक्ष्य पर बहुत ही जबरदस्त काम है। रंग जो शुरु से ही बोलते रहे हैं अब और भी खुल कर बतियाते हैं। पात्रों के हाव-भाव बिल्कुल ही सहज हैं। वास्तविक वातावरण का सृजन इतने बढ़िया तरीके से होता है कि चित्र और हकीकत में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता। है। दर्शक अनायास ही वातावरण के आस-पास खुद को पाता है और जुड़ाव गहरे तक स्थापित हो जाता है।

बात आती है ललित कला अकादमी की तो वही घिसी-पिटी सी बातें कि वहां तो अच्छे कामों का चयन ही नहीं होता सब ऐसे ही चलता है जैसी तमाम बातें और साथियों के साथ ही आपके मन में भी था, तभी किसी का धीरे से ये कहना कि क्या आपने अपने काम कभी वहां भेजें हैं या ऐसे ही प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं? बात सुनते ही आपको झटका लगा कि वाकई मैंने तो कभी भेजा नहीं। पहली बार राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के वार्षिक प्रर्दशनी में आप द्वारा अपने चित्र भेजे गये और पहली बार में ही चयन भी हो गया हालांकि पुरस्कार तीसरी बार में मिला। आप कहते हैं कि विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, निरंतर स्केच करते हैं, निरंतर पेंटिंग बनाते हैं अब तो आदत सी बन गई है। चूंकि हम शिक्षक हैं बच्चों को हमेशा कुछ नया सिखाने की जुगत में रहते हैं इसीलिए हमेशा अपडेट रहना चाहते हैं और कुछ ना कुछ नया जरूर सीखना चाहते हैं, सीखते भी रहते हैं। आप लगभग सभी माध्यमों में अच्छा करते हैं। आप शुरु से ही कल्पनाशील रहे हैं, विषय भले ही यथार्थ रहे हों पर प्रस्तुति में कल्पनाशीलता ने बहुत साथ दिया है और साथ दिया है गुरू त्रिपाठी जी के गुण ने। उनका कहना कि जिस भी चित्र को बनाना हो पहले आंख बंद कर के, साधना में लीन हो उसके बारे में खूब सुंदर सी कल्पना करो फिर आंख खोलो, कैनवास पर आपको चित्र बना मिलेगा बस वहां ब्रश चलाना होगा चित्र पूरा मिलेगा। ध्यान की प्रक्रिया गुरू जी से प्राप्ति के बाद आप आज भी ऐसे ही चित्र बनाते हैं।

डॉ. रामदरश मिश्र- हिंदी साहित्य का अमर योद्धा

कीर्ति शेष

संदीप सृजन

लेखक स्तंभकार हैं

15 अगस्त 1924 को श्रावण पूर्णिमा के दिन गोरखपुर जिले के कछार अंचल में डुमरी गाँव में रामदरश मिश्र का जन्म हुआ। पिता रामचंद्र मिश्र और माता कमलापति मिश्र के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। उनका बचपन प्रकृति की गोद में बीता। गाँव में बाढ़ का आतंक, खेतों की हरियाली, नदियों की लहरें,ये सब उनकी रचनाओं में बार-बार लौटते हैं। बचपन अभावपूर्ण था, लेकिन भावनात्मक रूप से समृद्ध रहा। माँ ने सहजता से वर्णमाला सिखाई तो पिता की रसिकता ने कला की नींव रखी। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के प्राइमरी-मिडिल स्कूल में हुई, हिंदी और उर्दू सीखी। फिर दस मील दूर ढरसी गाँव में पंडित रामगोपाल शुक्ल के पास अध्ययन किया। बरहज से विशारद और साहित्यरत्न प्राप्त किया। 1945 में वाराणसी आए, एक प्राइवेट स्कूल से मैट्रिक पास की। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इंटरमीडिएट, हिंदी में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी पूरी की। यहाँ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे गुरुओं का सान्निध्य मिला, जिन्होंने उनकी साहित्यिक चेतना को निखारा। द्विवेदी जी ने उनकी पहली कविता संग्रह 'पथ के गीत' की भूमिका लिखी।

साबनाया है मैंने यह घर धीरे-धीरे!
खुले मेरे ख्वाबों के पर धीरे-धीरे।
किसी को गिराया न खुद को उछाला,
कटा ज़िंदगी का सफर धीरे-धीरे।

इन पंक्तियों के अमर रचनाकार डॉ.रामरदश मिश्र 31अक्टूबर 2025 को दिल्ली में अपने 101 वर्ष के जीवन को पूर्ण कर अनंत की यात्रा पर निकल गये। गोरखपुर के डुमरी गाँव से निकलकर दिल्ली तक की यात्रा करने वाले डॉ मिश्र ने अपनी कलम से गाँव की मिट्टी को जीवंत किया, शहर की जटिलताओं को उकेरा और मानवीय संवेदनाओं को ऐसे शब्द दिए कि वे अमर हो गए। डॉ मिश्र का जाने का मतलब है हिंदी साहित्य ने अपना एक अनमोल रत्न खो दिया। उनका जीवन एक साधारण किसान परिवार से शुरू होकर हिंदी के शीर्ष पर पहुँचा।

15 अगस्त 1924 को श्रावण पूर्णिमा के दिन गोरखपुर जिले के कछार अंचल में डुमरी गाँव में रामदरश मिश्र का जन्म हुआ। पिता रामचंद्र मिश्र और माता कमलापति मिश्र के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। उनका बचपन प्रकृति की गोद में बीता। गाँव में बाढ़ का आतंक, खेतों की हरियाली, नदियों की लहरें,ये सब उनकी रचनाओं में बार-बार लौटते हैं। बचपन अभावपूर्ण था, लेकिन भावनात्मक रूप से समृद्ध रहा। माँ ने सहजता से वर्णमाला सिखाई तो पिता की रसिकता ने कला की नींव रखी।

प्रारंभिक शिक्षा गाँव के प्राइमरी-मिडिल स्कूल में हुई, हिंदी और उर्दू सीखी। फिर दस मील दूर ढरसी गाँव में पंडित रामगोपाल शुक्ल के पास अध्ययन किया। बरहज से विशारद और साहित्यरत्न प्राप्त किया। 1945 में वाराणसी आए, एक प्राइवेट स्कूल से मैट्रिक पास की। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इंटरमीडिएट, हिंदी में स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी पूरी की। यहाँ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे गुरुओं का सान्निध्य मिला, जिन्होंने उनकी साहित्यिक चेतना को निखारा। द्विवेदी जी ने उनकी पहली कविता संग्रह 'पथ के गीत' की भूमिका लिखी।

1940 के आसपास कविता लिखना शुरू किया। पहली प्रकाशित कविता 'चाँद' 1941 में 'सरयू पारीण' में छपी। 1942 में खंडकाव्य 'चक्रव्यूह' लिखा। बनारस में नई कविता के प्रभाव से रचना-दुनिया बदली। 1956 से 1990 तक कई जगह पर प्रोफेसर रहे। सेवानिवृत्ति के बाद लेखन और तेज हुआ। उन्होंने भारतीय लेखक संगठन के अध्यक्ष (1984-1990), गुजरात हिंदी

प्राध्यापक परिषद के अध्यक्ष (1960-64), मीमांसा के अध्यक्ष जैसे पद संभाले।

नेपाल, चीन, कोरिया, मॉस्को, इंग्लैंड की यात्राओं ने उनके दृष्टिकोण को विस्तृत किया।साहित्यिक यात्रा 1951 में 'पथ के गीत' से शुरू हुई, जो छायावादी प्रभाव वाली थी। प्रगतिवाद के दौर में 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप' आईं। नई कविता में 'कंधे पर सूरज', 'दिन एक नदी बन गया' ने उन्हें स्थापित किया। वे किसी 'वाद' में नहीं बंधे, बल्कि गाँव-शहर के द्वंद्व, दलित-नारी यातना, सामाजिक परिवर्तन को केंद्र बनाया। मिश्र जी के 32 कविता संग्रह हिंदी कविता को नया मुहावरा देते हैं। गीत, मुक्तक, ग़ज़ल, लंबी कविता, सबमें सहजता। प्रमुख संग्रह- 'जुलूस कहाँ जा रहा है?', 'आग की हँसी' (साहित्य अकादमी 2015), 'मैं तो यहाँ हूँ' (सरस्वती सम्मान 2021), 'आम के पत्ते' (व्यास सम्मान 2011), बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे। उनकी कविता में गँवई बोली की मिठास है। उनकी कविता आम आदमी की करुणा पर केंद्रित है। प्रेमचंद की परंपरा में वे सादगी की कला साधते हैं। उम्र के अंतिम दौर में कविताएँ सहज अनौपचारिक हुईं, जो जीवन की जिजीविषा दिखाती हैं।

उनके 15 उपन्यासों में गाँव का जीवंत चित्रण है, 'पानी के प्राचीर' (1961) से शुरू, जो गाँव की कठिन जिन्दगी दिखाता। 'जल टूटता हुआ' गाँव का महाकाव्य, 'सूखता हुआ तालाब' जल संकट पर। 'अपने लोग' मामूली आदमी का देवत्व दिखाता है, 'आदिम राग', 'बिना दरवाजे का मकान', 'थकी हुई सुबह', 'बीस बरस', 'परिवार' इनमें आंचलिकता, स्त्री-जीवन, दलित चेतना प्रमुख है। 30 कहानी संग्रह में 'खाली घर (1968), 'एक वह', 'दिनचर्या', 'सर्पदंश', 'फिर कब आएँगे?', 'विदूषक, कहानियाँ अंधविश्वास, शहरी तनाव, नारी विमर्श पर है।

डॉ मिश्र की आलोचना में 15 पुस्तकें प्रकाशित हुई। हिंदी आलोचना का इतिहास, हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा, हिंदी कहानी- अंतरंग पहचा। निबंध- कितने बजे हैं, छोटे-छोटे सुख, बबूल और कैक्टस। आत्मकथा सहचर है समय उपन्यास जैसी बाँधती है। यात्रावृत्तांत- घर से घर तक, तना हुआ इन्द्रधनुष। संस्मरण- स्मृतियों के छन्द, पड़ोस की खुशबू। डायरी- आते-जाते दिन। रचनावली 14 खंडों में। उनकी रचनाएँ गुजराती, मराठी, अंग्रेजी आदि में अनुवादित। 300 से अधिक शोध, 60 आलोचना पुस्तकें उनके साहित्य पर।

सम्मानों की लम्बी लिस्ट में डॉ मिश्र को पद्मश्री (2025), साहित्य अकादमी (2015), सरस्वती सम्मान (2021), व्यास सम्मान (2011), भारत भारती (2005), शलाका सम्मान (2001), विश्व हिंदी सम्मान (2015), महापंडित राहुल सांकृत्यायन (2004) आदि 21 से अधिक पुरस्कार मिले। वे सम्मानों से सदैव दूर रहे और लेखन पर केंद्रित रहे। इसी कारण वे वर्तमान के महान रचनाकारों में शीर्ष पर माने जाते है। मिश्र जी जीवन पर्यंत गाँव की मिट्टी से जुड़े रहे, दिल्ली में भी सीधे-सादे, स्वाभिमानी, युवा लेखकों के लिए प्रेरक बने, सहोगी रहे। उनकी कलम की रोशनी हमेशा नये रचनाकारों का पथ प्रदर्शित करती रहेगी। विनम्र श्रद्धांजलि....।

थामा: हॉरर कामेडी जेनर की एक और फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं ।

कोशिश की है, लेकिन कमजोर कहानी और असन्तुलित पटकथा के कारण उसका पूरा असर नहीं दिखता है ।रश्मिका मन्दाना स्क्रीन पर सिर्फ दिखने में आकर्षक हैं, लेकिन उनका भूमिका पूरी तरह सपाट है जिसमें वह चाहकर भी जान नहीं डाल पाई है । उनकी डायलॉग डिलीवरी भी बहुत कमजोर और बेअसर है, जिससे सीन में इमोशन बिलकुल नहीं आता। नवाजुद्दीन सिद्दीकी वैम्पायर के रूप में कई जगह बहुत ही ज्यादा ड्रामैटिक और ओवर-द-टॉप लगते हैं, जिससे कुछ सीन हँसी का कारण बन जाते हैं और फिल्म का टोन और भी असन्तुलित हो जाता है। परेश रावल हल्का हास्य जोड़ने की कोशिश करते हैं, लेकिन लगता है जैसे उन्होंने .मजाक करना याद आया है, लेकिन तरीका भूल गए वाली स्टाइल अपनाई हो। अभिषेक बनर्जी कैमियो में आते हैं और एक झलक के लिए याद रहते हैं। वहीं, वरुण धवन का कैमियो लम्बा है, लेकिन यह भी कहानी में जान डालने से चूक गये ।

हिन्दी फिल्म में हॉरर-कामेडी फिल्म के चलन वाले मामले में लगभग सात साल पहले जो एक नया अन्दाज़ फिल्म - ' स्त्री ' के साथ शुरु हुआ था वह लगातार आगे बढ़ता गया और आज वो सफलता का नया फार्मूला बन गया है ।जबरदस्त सफलता के साथ हॉरर-कॉमेडी यूनिवर्स की एक मजबूत नींव रखने वाली इस फिल्म ' स्त्री' के बाद इसी जेनर की तीन और फिल्मों 'भेड़िया' 'मुंज्या ' और 'स्त्री 2 'के बाद इन्हीं फिल्मों के निर्देशक आदित्य सरपोत्दार की फिल्म - ' थामा ' । यह फिल्म इस कड़ी की पाँचवीं फिल्म है ।

निर्देशक आदित्य सरपोतदार ने इस फिल्म में भारतीय लोक कथाओं से प्रेरित बेताल की प्रजाति को कहानी का मुख्य आधार बनाया गया है । फिल्म में लोक कथाओं और आज के दौर के घटनाक्रम को मिलाकर एक ऐसा मिश्रण बनाया है जो दर्शकों के आस्वाद वाले मापदण्ड पर एकदम खरा उतरता है ।फिल्म के शानदार दृष्य प्रभावों (विजुअल इफेक्ट्स)और तकनीकी पहलू दर्शकों को एक मनोरम दृष्यानुभव (विजुअल ट्रीट) का अनुभव तो करवाते हैं मंदिर इस फिल्म में कहानी और हस्य दृष्य भी उतने ही मजबूत होते, तो निसंदेह यह हॉरर-कॉमेडी यूनिवर्स की एक यादगार फिल्म बन सकती थी।

कहानी दिल्ली के पत्रकार आलोक के इर्द-गिर्द घूमती है ,यह मुख्य भूमिका आयुष्मान खुराना ने निभाई है । आलोक जो अपने दोस्तों के साथ ट्रैकिंग पर जाता है। ट्रैकिंग के दौरान अचानक उस पर भालू हमला करता है और तड़ाका उसकी जान बचाती है। इसके बाद आलोक वैम्पायरों की दुनिया में फँस जाता है। तड़ाका की भूमिका रश्मिका मन्दाना ने निभाई है ।शुरुआत में कहानी थोड़ी रोचक लगती है, लेकिन जैसे ही फिल्म मध्यान्तर के बाद आगे बढ़ती है, सब बिखर जाता है। न डर का असर बचता है, न रोमांस बचता है न कॉमेडी का सन्तुलन। क्लाइमेक्स भी लगता बहुत जल्दबाजी में समेटा गया है, जिससे अन्त में कोई इमोशनल असर भी नहीं बचता है ।

आयुष्मान खुराना पत्रकार की भूमिका में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं , उन्होंने अपनी भूमिका की ज़रूरत के मुताबिक डर और उत्सुकता के भाव दिखाने की अच्छी सिनेमैटोग्राफी जबरदस्त है। संगीत की बात की जाए, तो सचिन-जिगर के रचे म्यूजिक में, तुम मेरे न हुए काफी हिट हो चुका है, जबकि - दिलबर की आँखों का और पॉइजन बेबी भी पसन्द किए जा रहे हैं। सच तो यह है कि थामा' केवल उन लोगों के लिए है जो आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना को स्क्रीन पर देखना चाहते हैं। कहानी, हॉरर, कॉमेडी... सब कमजोर है। वरुण धवन का कैमियो भी बस दिखावे तक सीमित है। कुल मिलाकर, फिल्म पूरी तरह निराशाजनक है... न डराती है, न हंसाती है और देखने लायक कोई चीज नहीं छोड़ती।

सच तो यह है कि - थामा केवल उन लोगों के लिए है जो आयुष्मान खुराना और रश्मिका मन्दाना को स्क्रीन पर देखना चाहते हैं। कहानी, हॉरर, कॉमेडी सब तो कमजोर है। वरुण धवन का कैमियो भी बस दिखावे तक सीमित है। कुल मिलाकर, फिल्म पूरी तरह निराशाजनक है.न डराती है, न हँसाती है और देखने लायक कोई चीज नहीं छोड़ती।

कालिदास के नाटकों का मंचन यहाँ नहीं होगा, तो कहाँ होगा?

महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का विश्व साहित्य में जो सम्मान है, उससे कोई अपरिचित तो है नहीं। बीसवीं सदी में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को लेकर विद्वानों में बहुत विचार-विमर्श हुआ है। 66 वर्ष पहले कालिदास समारोह की शुरुआत ही 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मंचन से हुई थी। इन 66 वर्षों में कई बार 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का योग्य निर्देशन में मंचन हुआ भी है। लोग बार-बार इस नाटक का मंचन चाव से देखना चाहते हैं। आयोजक लोगों की रुचि का ध्यान क्यों नहीं रखते?

विमर्श
डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस बार अखिल भारतीय कालिदास समारोह में कालिदास के किसी भी नाटक का मंचन नहीं हो रहा है। अमिता खरे की शास्त्रीय नाटिका %शकुन्तला% बेहतर होने की उम्मीद की जानी चाहिए, लेकिन सम्पूर्ण नाटक की बात और है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि आयोजन समिति हमें कालिदास से दूर ही रखना चाहती है। पिछले वर्षों में मालविकाग्निमित्रम् का मंचन जरूर हुआ है, दूसरे नाटकों का भी। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। कालिदास के किसी एक नाटक का मंचन प्रतिवर्ष अनिवार्य रूप से हो, यह तो सुनिश्चित् किया जाना चाहिए। महाकवि के नाटकों को हाशिये पर डाल कर कालिदास समारोह की सफलता नहीं आँकी जा सकती। कालिदास के नाटकों का मंचन यहाँ नहीं होगा, तो कहाँ होगा?

महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का विश्व साहित्य में जो सम्मान है, उससे कोई अपरिचित तो है नहीं। बीसवीं सदी में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को लेकर विद्वानों में बहुत विचार-विमर्श हुआ है। 66 वर्ष पहले कालिदास समारोह की शुरुआत ही 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के मंचन से हुई थी। इन 66 वर्षों में कई बार 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का योग्य निर्देशन में मंचन हुआ भी है। लोग बार-बार इस नाटक का मंचन चाव से देखना चाहते हैं। आयोजक लोगों की रुचि का ध्यान क्यों नहीं रखते?

जर्मन कवि गेटे 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का जर्मनी अनुवाद पढ़कर जितने अभिभूत हुए थे, उतने कभी शेक्सपियर के लिखे नाटकों को उसकी मूल भाषा में पढ़कर भी नहीं हुए थे। गेटे जब 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अनुवाद पढ़कर उठे, तब उन्होंने भाव-विभोर होकर लिखा था- यदि तुम बसन्त के तरुण फूलों और ग्रीष्म के पके हुए फलों

को एक साथ देखना चाहते हो, या तुम देखना चाहते हो उसे, जो एक ही साथ सुख दे, मोहित कर ले, आह्लादित करे और तृप्त भी कर दे; अथवा यदि तुम धरती और स्वर्ग को एक साथ देख लेना चाहते हो, तो मैं एक ही नाम बताता हूँ 'शकुन्तला'। वहाँ सभी प्रश्नों के उत्तर एक? साथ विद्यमान हैं।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' भारतीय ऋषि परम्परा का ऐसा मौलिक दस्तावेज है, जिससे प्रत्येक भारतीय को परिचित होना चाहिए। यह काम कालिदास समारोह के जरिए नहीं होगा, तो फिर कौन करेगा? इतने वर्ष बीत गये, आयोजन समिति ने इस नाटक के सरल अनुवाद भी अभी तक उपलब्ध नहीं कराये। प्रति वर्ष कम से कम एक मंचन तो कालिदास रचित नाटक का होना ही चाहिए। अब तो कालिदास को छोड़ संस्कृत के शूद्रक, भास, भवभूति, भट्टनारायण के नाटकों का भी मंचन यहाँ नहीं होता।

कालिदास समारोह में अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मंचन तो होना ही चाहिए, उन प्राचीन मूल्यों की चर्चा भी होनी चाहिए, जो इस नाटक में मौजूद है। शकुन्तला कोई साधारण स्त्री तो है नहीं। उसके तार ऋषिकुलों से जुड़ते हैं। वह ऋषि विश्वामित्र की दुहिता है, ऋषि कण्व की पालिता है, कश्यप ऋषि (मारीच) की शरणागता है। इनमें से विश्वामित्र और कश्यप तो सप्तर्षियों में हैं, इनके आश्रम भी अंतरिक्ष में बताये गये हैं। कण्व पृथ्वी पर हैं, जिनके आश्रम में शकुंतला पली-बढ़ी। वहाँ भी वह निसर्ग-कन्या है। लता-पादपों, आश्रम के निर्भीक प्राणियों से उसका जो लगाव है, वह लोकोत्तर है। इसकी कथा में कई उतार-चढ़ाव हैं, कई रहस्य हैं, जो अब भी हमारे अभिज्ञान में नहीं है। शायद इसीलिए कालिदास का 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' हमसे गम्भीर शोध और अनुसंधान की मांग करता है। संस्कृत साहित्य के विद्वान् और शोधार्थी पिष्टपेषण छोड़कर कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' की गहराई में उतरें, तो कई नये तथ्य सामने लाये जा सकते हैं।

कालिदास का प्रसिद्ध नाटक विक्रमोर्वशीयम् पहले के कालिदास समारोह में खूब खेला गया। इस नाटक के चौथे अंक को लेकर प्रसिद्ध रंगकर्मियों और कला-निर्देशकों ने अद्भुत प्रयोग भी किये हैं, किन्तु अब वह भी सब कुछ थमा हुआ है। यही बात मालविकाग्निमित्रम् के साथ भी है। हमें यह ध्यान रखना होगा कि संस्कृत रंगकर्म को जीवन-दान कालिदास समारोह में ही मिल सकता है। यदि वही इसकी जड़ें काटना शुरू कर दे, तो अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम् सहित सभी बड़े संस्कृत नाट्य आलेख किताबों में बंद पड़े रह जायेंगे, और इसकी जवाबदेही कालिदास समारोह जैसे खर्चीले आयोजनों की ही मानी जायेगी।

जरूरी नहीं कि ये नाटक संस्कृत में ही खेले जायें। शूद्रक के प्रसिद्ध नाटक 'मृच्छकटिकम्' को 'मिट्टी की गाड़ी' में पेश किया गया है। वह लोगों को अभी तक याद है। संस्कृत के नाटक लोकभाषाओं में, हिन्दी और दूसरी प्रादेशिक भाषाओं में खेले जायें, तो और भी अच्छा। भास के स्वप्नवासवदत्तम्, शूद्रक के मृच्छकटिकम्, भट्टनारायण के वेणीसंहारम्, भवभूति के उत्तररामचरितम् और दूसरे कई संस्कृत नाटकों के अन्य भाषाओं में मंचन का चलन बढ़े, तो कालिदास समारोह का रंगमंच सचमुच खिल उठेगा। लेकिन इस दिशा में सोचने वाले अब कालिदास समारोह की समिति में ही नहीं बचे।

चार दशक पहले कालिदास संस्कृत अकादमी ने महाकवि कालिदास-रचित नाटकों के बालोपयोगी संस्करण विद्वान् लेखकों से तैयार करवाये थे। वे कभी भी बच्चों के हाथ में नहीं पहुँचे। अकादमी चाहती, तो बच्चों से इन नाटकों का मंचन करवा कर कीर्तिमान रच देती। कालिदास समारोह सचमुच अखिल भारतीय स्तर का दिखाई भी दे, इसके लिये वर्ष भर तैयारी की आवश्यकता है। लेकिन संस्कृति विभाग कुछ दिनों पहले ही जागता है, और आनन-फानन में आयोजन की रूपरेखा बना डालता है।आशा की जानी चाहिए कि आने वाले वर्षों में कालिदास समारोह का आयोजक मंडल महाकवि कालिदास के नाटकों के सरल अनुवाद जन-जन तक पहुँचायेगा, नाटकों के मंचन की सुध लेगा, और इस पर व्यापक विमर्श भी आयोजित करेगा।

सिद्ध चक्र मंडल विधान-जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान

उपाध्याय श्री विभंजन सागरजी मुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में सिद्धचक्र मंडल विधान का हो रहा आयोजन

धार। श्री दिगंबर जैन समाज धार में उपाध्याय श्री विभंजन सागरजी मुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में सिद्धचक्र मंडल विधान के आयोजन पर मुनिश्री ने कहा कि जैन धर्म में सिद्धचक्र मंडल विधान का विशेष महत्व है।

यह विधान विशेष रूप से अष्टान्हिका पर्व (फाल्गुन, कार्तिक और आषाढ़ के अंतिम आठ दिन) के दौरान किया जाता है, क्योंकि इस समय देवगण भी सिद्ध भगवान की आराधना करने आते हैं।

सिद्ध चक्र मंडल विधान जैन धर्म में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है जो ज्ञात-अज्ञात पापों का प्रायश्चित करता है और सभी मनोकामनाओं को पूरा करता है। यह आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर ले जाता है, सांसारिक जीवन जीने की कला सिखाता है और कर्मों से मुक्ति पाने का मार्ग दिखाता है। इस विधान को सबसे श्रेष्ठ और कल्याणकारी माना जाता है, जो जीवन में अनंत सुख प्रदान करता है।

पाप प्रक्षालन- यह गृहस्थ जीवन में किए गए ज्ञात और अज्ञात पापों के प्रायश्चित के लिए एक प्रभावी तरीका है।

मोक्ष प्राप्ति- यह सिद्धत्व और मोक्ष की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

मनोकामनाओं की पूर्ति- यह सभी मनोरथों को पूर्ण करने में सहायक होता है।

आत्मज्ञान और कल्याण- यह आत्मज्ञान और जीने की कला सिखाता है, साथ ही विश्व कल्याण की भावना को भी बढ़ाता है।

कर्म-निर्जरा- यह कर्मों को नष्ट करने का एक शक्तिशाली माध्यम है।

ऐतिहासिक महत्व- राजा श्रीपाल और रानी मैना सुंदरी की कथा के कारण इसका विशेष महत्व है, जिन्होंने इस मण्डल विधान की आराधना कर अपने पति राजा श्रीपाल का कुष्ठ रोग को मिटाया था।

सिद्धचक्र विधान में कुल 9 विधान समाहित हैं, जिनमें 9 पद (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु और चार दर्शन, ज्ञान, चरित्र, तप) शामिल हैं। यह विधान 8 दिनों तक किया जाता है, जिसमें हर दिन एक पूजा की जाती है। ये विधान विशेषत्तर अष्टान्हिका पर्व के दौरान किया जाता है। पर कोई शुभ अवसर पर भी इस विधान को किया जा सकता है। विधान में 8 पूजाएं होती हैं, जिसमें हर दिन एक-एक पूजा की जाती है। हर एक श्रद्धालु को सिद्धचक्र महामंडल विधान करना चाहिए। क्योंकि अंतिम लक्ष्य के रूप में संसारी प्राणी मोक्ष नहीं पा सकता है। इसलिए सिद्धों की आराधना के बिना मोक्ष का लक्ष्य सिद्ध नहीं हो सकता। इस अवसर पर देव लोग भी नंदीश्वर दीप में आकर सिद्ध भगवान की आराधना करते है, स्वर्ग से इंद्रलोक भी मंदिरों में भगवान की भक्ति करने आते है। फाल्गुन, कार्तिक व आषाढ़ के अंतिम आठ दिन अष्टमी से पूर्णिमा तक यह पर्व आता है। इन आठ दिनों में सिद्धों की यह विशेष आराधना के लिए सिद्धचक्र विधान किया जाता है। सिद्ध शब्द का अर्थ है कृत्य-कृत्य। चक्र का अर्थ है समूह और मंडल का अर्थ एक प्रकार के वृताकार यंत्र से है। इनमें अनेक प्रकार के मंत्र व बीजाक्षरों की स्थापना की जाती है। मंत्र शास्त्र के अनुसार, इसमें अनेक प्रकार की दिव्य शक्तियां प्रकट हो जाती है।

सिद्धचक्र महामंडल विधान समस्त सिद्ध समूह की आराधना मंडल की साक्षी में की जाती है। जो हमारे समस्त मनोरथों को पूर्ण करती है। जैन दर्शन में अष्टांहिका महापर्व का विशेष महत्व बतलाया गया है।सिद्ध चक्र महामंडल विधान जैन धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र अनुष्ठान है, इस विधान का उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति, आत्म शुद्धि कर आत्मा मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होती है।

कॉलेज में 'हेलोवीन' सेलिब्रेशन पर एबीवीपी का विरोध

भोपाल (नप्र)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) भोपाल महानगर के भेल भाग ने बीएसएसएस कॉलेज परिसर में आयोजित 'हेलोवीन सेलिब्रेशन' का विरोध करते हुए इसे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विपरीत बताया। परिषद ने कॉलेज प्रशासन से मांग की कि इस तरह के पाश्चात्य और असंस्कारी कार्यक्रमों पर तत्काल रोक लगाई जाए।अभाविप पदाधिकारियों ने कहा कि कॉलेज में विद्यार्थी भूत-प्रेत और राक्षसों के वेश में सजकर नृत्य एवं अन्य गतिविधियां कर रहे थे, जो भारतीय संस्कारों के अनुरूप नहीं हैं। ऐसे आयोजन युवाओं में पाश्चात्य संस्कृति की अंधी नकल को बढ़ावा देते हैं और शैक्षणिक माहौल को भी दूषित करते हैं।अभाविप भेल भाग संयोजक प्रतीक द्विवेदी ने कहा कि आज बीएसएसएस कॉलेज में 'हेलोवीन डे' मनाया जा रहा था, जिसके विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने प्रदर्शन किया। कॉलेज में छात्रों को मृतक बनाकर और असंस्कारी कार्यक्रम कराए जा रहे थे, जिसकी हम कड़ी निंदा करते हैं। यह हमारी संस्कृति के विरुद्ध है। कॉलेज प्रशासन ने हमें आश्वासन दिया है कि भविष्य में ऐसे पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित किसी भी आयोजन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

ज्योतिष एवं वास्तु विद्वानों के गरिमामय सम्मान समारोह में धार की हस्तरेखा विशेषज्ञ रेखा विजय मेहता सम्मानित

धार । इंदौर में आयोजित, इंदौर की सामाजिक और ज्योतिष संस्था, श्री केवल रामधाम ज्योतिष संस्थान द्वारा आयोजित ज्योतिष एवं वास्तु विद्वान सम्मान समारोह में धार की बेटी, हस्त रेखा विशेषज्ञ रेखा विजय मेहता को पूर्व राज्यमंत्री महंत योगेंद्र जी महाराज, सांसद प्रतिनिधि संतोष वाधवानी के विशेष आतिथ्य, महामंडलेश्वर प्रेमानंद महाराज, आयोजक ज्योतिषाचार्य प्रकाश गौड के द्वारा 'ज्योतिष गौरव रत्न' सम्मान प्रदान किया। इस अवसर पर देशभर से ज्योतिष, वास्तु, कर्मकांड, रत्न, तंत्र, मंत्र, कुंडली विशेषज्ञ और आध्यात्मिक क्षेत्र विद्वान उपस्थित रहें।श्रीमति मेहता सामाजिक, धार्मिक संगठनों, में सराहनीय योगदान,के साथ साथ वैश्य महासम्मेलन महिला जिला इकाई की जिला अध्यक्ष, जैन सोशल ग्रुप सिटी की उपाध्यक्ष भी है। आपको मिले सम्मान पर जे एस जी धार, वैश्य महासम्मेलन की तीनों इकाई, समाजजनों, मित्रों, ने बधाई और शुभकामनाएं दी।

एसआईआर के लिए कांग्रेस ने बनाई कमेटी,पूर्व मंत्री सज्जन वर्मा बने अध्यक्ष, 8 सदस्यीय कमेटी करेगी मॉनिटरिंग और कोआर्डिनेशन

भोपाल (नप्र)। एमपी में शुरू हुई एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) की कार्यवाही की मॉनिटरिंग के लिए कांग्रेस अलर्ट है। बिहार में मतदाता सूची के लिए हुए एसआईआर पर चुनाव आयोग पर वोट चोरी का आरोप लगा चुकी कांग्रेस ने अब एमपी में आयोग की पूरी कार्यवाही का मॉनिटरिंग के लिए 8 सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा को इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया है।

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने गठित कमेटी से कहा है कि पूरे एसआईआर कार्यक्रम की प्रभावी मॉनिटरिंग के साथ इसमें कोआर्डिनेशन का काम भी कमेटी में शामिल सदस्य और पार्टी नेता करेंगे।

इन्हें किया गया नियुक्त

नाम	पद
सज्जन सिंह वर्मा	अध्यक्ष
डॉ. संजय कामले	सदस्य
राजीव सिंह	सदस्य
शैलेंद्र पटेल	सदस्य
जेपी धनोपिया	सदस्य
गोरखी बैरागी	सदस्य
रितेश जैन	सदस्य
ललित सेन	सदस्य

धनोपिया को चुनाव आयोग से संबंधित मामलों के प्रदेश प्रभारी-कांग्रेस ने जेपी धनोपिया को चुनाव आयोग से संबंधित मामलों के लिए प्रदेश प्रभारी की जिम्मेदारी सौंप रखी है और वे पिछले दिनों मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय द्वारा बुलाई गई स्टैडिंग कमेटी की मीटिंग में एसआईआर को लेकर चुनाव आयोग द्वारा तय टाइम और अन्य व्यवस्थाओं पर सवाल उठा चुके हैं।

7 फरवरी 2026 तक चलेगी प्रक्रिया-मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी झा ने बताया कि एसआईआर की प्रक्रिया 8 फरवरी 2026 तक चलेगी। 3 नवंबर तक बीएलओ को ट्रेनिंग दी जाएगी। 4 नवंबर से 4 दिसंबर तक बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर सर्वे किया जाएगा। 9 दिसंबर को मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन किया जाएगा।

9 दिसंबर से 8 जनवरी 2026 तक दावा आपत्तियों के आवेदन लिए जाएंगे। 9 दिसंबर से 31 जनवरी 2026 तक दस्तावेजों का सत्यापन किया जाएगा। इसके बाद 7 फरवरी 2026 को फाइनल मतदाता सूची का प्रकाशन होगा।

इंदौर-खंडवा फोरलेन पर किसानों का चक्काजाम

बैलगाड़ी अड़ाई, सड़क पर गन्ने के मंडप लगाए; बोले- राहत राशि नहीं मिली, सरकार ने प्याज के दाम गिराए

खंडवा (नप्र)। खंडवा-इंदौर फोरलेन पर संयुक्त कृषक संगठन के बैनर तले किसानों ने शनिवार दोपहर 12 बजे चक्काजाम कर दिया। सैकड़ों किसान छैगांव और देशगांव के बीच बायपास वाले रास्ते पर बैलगाड़ी अड़ाकर धरने पर बैठ गए। महज आधे घंटे के भीतर दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई।

सूचना मिलने के बाद अपर कलेक्टर काशीराम बड़ौले, एसडीएम ऋषि सिंघई, डीएसपी हेडक्वार्टर अनिलसिंह चौहान सहित तहसीलदार मौके पर पहुंचे हैं। किसानों ने फसल बीमा क्लेम न मिलने और अपर्याप्त राहत राशि को लेकर सरकार पर अन्याय करने का आरोप लगाया है। किसानों ने देवउठनी ग्यारस का दिन होने के चलते गन्ने के मंडप भी बनाए हैं।अधिकारियों ने लिखित में किसानों को आश्वासन दिया कि अगले एक हफ्ते के अंदर राहत राशि वितरण का काम पूरा किए जाने की बात कही है। प्याज के दामों को लेकर अफसरों ने शासन स्तर का मामला बताया है। कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने बताया, जिले के सभी तहसीलदारों को निर्देश दिए हैं कि जिन किसानों की फसल प्राकृतिक आपदा के कारण प्रभावित हुई है, उनका सर्वे करे।

सांवरिया सेठ मंदिर में श्री भविष्य महापुराण का भव्य समापन, धार के गौरवशाली इतिहास का हुआ वाचन

धार। त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर में 18 महापुराण समिति के तत्वावधान में चल रही 'नवम श्री भविष्य महापुराण' का विधि-विधान से भव्य समापन हुआ। समापन दिवस पर व्यास पीठ पर विराजित पंडित रमाकांत जी व्यास ने भविष्य महापुराण के 'प्रतिसर्ग पर्व' के महत्व पर प्रकाश डाला।

धारा नगरी और राजा भोज के प्रसंगों का विशेष वाचन-पंडित व्यास ने कथा के अंतिम दिवस धार की ऐतिहासिक 'धारा नगरी', प्रतापी राजा भोज, उनके द्वारा स्थापित 'भोजशाला' एवं 'माँ वाग्देवी' (सरस्वती) प्रतिमा की स्थापना, और गौशाला के प्रादुर्भाव का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि भविष्य पुराण ही वह दुर्लभ ग्रन्थ है जिसमें मध्यकालीन भारत के राजाओं, राजा भोज के शासनकाल, राजा विक्रमादित्य से उनके संबंध और यहाँ तक कि आल्हा-ऊदल की वीरगाथा का भी विस्तृत वर्णन मिलता है।ॉकथा के अंतिम दिवस विशेष रूप से धार के इतिहास का बोध कराया गया। समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी एवं अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी ने बताया कि श्रद्धालुओं ने यह जानकर

गर्व अनुभव किया कि धार का गौरवशाली इतिहास महर्षि वेदव्यास द्वारा हजारों वर्ष पूर्व ही भविष्य महापुराण में लिख दिया गया था।

नर्मदा परिक्रमा आश्रम हेतु भक्तों ने किया मुक्त हस्त से दान-कथा व्यास पंडित रमाकांत व्यास द्वारा नर्मदा परिक्रमा वासियों की सुविधा हेतु ग्राम सहजला मांदला (जिला खंडवा) में एक आश्रम का नवनिर्माण कार्य कराया जा रहा है। कथा के दौरान उपस्थित जनसमुदाय ने इस पुण्य कार्य हेतु मुक्त हस्त से दान किया। पंडित व्यास ने बताया कि उनकी कथाओं से प्राप्त समस्त सहयोग राशि इसी आश्रम निर्माण में लगाई जाती है, ताकि नर्मदा परिक्रमा करने वाले भक्तों को ठहरने व भोजन की उचित व्यवस्था मिल सके।

व्यास पीठ का हुआ सम्मान-कथा समापन के अवसर पर 18 महापुराण समिति के सदस्यों द्वारा व्यास पीठ का पूजन किया गया। समिति के अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी, कोषाध्यक्ष दशरथ सिंह, सचिव पंडित संतोष पांडेय ने पंडित रमाकांत व्यास को शाल, श्रीफल भेंट कर व साफा बांधकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज एकता परिषद की प्रांत अध्यक्ष संध्या राजपुरोहित एवं महासचिव सोनिया जोशी एवं दुबे ने भी व्यास पीठ का सम्मान किया। मंच पर विराजित कलाकारों को भी सम्मानित किया गया।

आयोजन के दौरान 18 महापुराण समिति के सभी सदस्य, जगदीश जोशी, प्रताप रघुवंशी, अधिवक्ता के.डी. वैष्णव, पार्षद अजीत जैन, रितेश शर्मा, सर्व ब्राह्मण समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष मीना दुबे, सरोज सोनी, एकता तिवारी, सुंदर उपाध्याय, दिव्या महत्व, मीरा पांडे, शोभा चौहान, भारती जोशी,गरिमा गुप्ता, गोपाल दास गुप्ता, शिव शंकर वर्मा, गजेंद्र सिंहचौहान,सत्यनाराय शर्मा, श्रीमती चंद्रकला शर्मा, माया शर्मा, शीला हारने, कुसुम भटूरे, ओमप्रकाश सोलंकी, विजयारानी सोलंकी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु विशेष रूप से उपस्थित रहे। समिति ने जानकारी दी कि नव महापुराण के दौरान श्रद्धालुओं की अपार भीड़ रही और लोगों ने बहुत ही धैर्य के साथ कथा श्रवण का लाभ लिया।

जानकारी 18 महापुराण समिति के मीडिया प्रभारी एवं समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी द्वारा दी गई।

जाहिर सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम अमित कुमार जैन है जोकि मेरे सभी दस्तावेजों में मौजूद है। जैसे-आधार कार्ड, पेन कार्ड आदि में दर्ज है। मेरा नाम मेरे पुत्र पर्व बड़कुल के स्कूल के दस्तावेजों में त्रुटिवश अमित जैन गलत अंकित हो गया है। उक्त नाम को आज के बाद अमित कुमार जैन ही लिखा व पढ़ा जावें। उक्त के संबंध में जाहिर सूचना प्रकाशित की जा रही है।

'वीकेंड क्लब'

साइबर क्राइम की नई वेब सीरीज़

साइबर अपराध जनरेशन जेड और पूरे देश के लिए एक स्पष्ट और मौजूदा खतरा हैं। साइबर अपराधों के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए, हम एक समकालीन साइबर क्राइम थ्रिलर 'वीकेंड क्लब' के साथ एक बेहद मनोरंजक वेब सीरीज़ पेश कर रहे हैं, जिसमें तीस-तीस मिनट के छह भाग हैं।

भारतीय टेलीविजन थ्रिलर्स के जाने माने निर्देशक हीरेन अधिकारी की वापसी विब्रो मोशन पिक्चर्स के निर्माता किरण लांजेवार की क्राइम वेब सीरीज 'वीकेंड क्लब' के साथ हुई है। यह साइबर क्राइम थ्रिलर वेब सीरीज अब हंगामा ओटीटी और एयरटेल एक्सट्रीम प्लेटफॉर्म पर देखने के लिए के लिए उपलब्ध है। इस क्राइम थ्रिलर का शुभारंभ महाराष्ट्र साइबर विभाग के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक यशस्वी यादव

ने साइबर अपराध जागरूकता माह की पूर्व संध्या पर मुंबई में किया।

इस अवसर पर बोलते हुए यादव ने कहा कि भारत को 2024 में साइबर अपराधियों के कारण 22,845.73 करोड़ रुपए का नुकसान होगा, जो 2023 के 7465 करोड़ रुपये से 206त्न की वृद्धि है। 2024 में 36 लाख से ज़्यादा मामले दर्ज किए जाएंगे। भारत में तेजी से डिजिटल विस्तार के कारण परिष्कृत साइबर खतरों और बढ़ते हमलों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसमें मैलवेयर डिटेक्शन, वित्तीय घोटाले, डिजिटल गिरफ्तारियाँ, सेक्सटॉर्शन और बुजुर्गों जैसे कमजोर समूहों को निशाना बनाकर किए जाने वाले एआई-संचालित हमले शामिल हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह वेब सीरीज़ साइबर अपराधों के खिलाफ जागरूकता पैदा करने में मदद करेगी।

निर्माता किरण लांजेवार ने कहा कि साइबर अपराध जेनरेशन जेड और पूरे देश के लिए एक

स्पष्ट और मौजूदा खतरा हैं। साइबर अपराधों के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए, हम एक समकालीन साइबर क्राइम थ्रिलर 'वीकेंड क्लब' के साथ एक बेहद मनोरंजक वेब सीरीज़ पेश कर रहे हैं, जिसमें तीस-तीस मिनट के छह भाग हैं। निर्माण मूल्य उद्योग के मानकों के अनुरूप हैं। इस परियोजना की शूटिंग सूरत, मुंबई और लोनावाला

के बाहरी स्थानों पर बारीकियों और निर्माण मूल्य का अत्यंत ध्यान रखते हुए की गई है।

भारतीय टीवी थ्रिलर्स के हीरेन अधिकारी ने कहा कि जनरेशन जेड साइबर क्राइम 'वीकेंड क्लब' मनोरंजन उद्योग और 1.4 अरब भारतीयों के लिए मेरी नई पेशकश है। अगर इस बेहद मनोरंजक वेब सीरीज के माध्यम से साइबर अपराधों के खिलाफ संदेश आम लोगों तक पहुँचता है, तो मुझे लगता है कि हमने अपना मूल उद्देश्य हासिल कर लिया है। मुझे इस अत्याधुनिक साइबर क्राइम थ्रिलर के साथ ओटीटी मीडिया में अपनी वापसी का जश्न मनाते हुए खुशी हो रही है। इस वेब सीरीज़ का निर्माण किरण लांजेवार ने अपने बैनर विब्रो मोशन पिक्चर्स के तहत किया है। इस वेब सीरीज का निर्देशन 'सब टीवी' के अधिकारी ब्रदर्स के हीरेन अधिकारी ने किया है।

इसके मुख्य कलाकारों में संजय परमार (एक विलेन रिटर्न्स, मीरा, बालिका वधू, प्रोजेक्ट 9191, और वेब सीरीज द कलर ऑफ डार्कनेस), निया त्रिपाठी (तेलुगु फिल्म बलमेव वधू), अमिका शैल (वेब सीरीज नचनिया, खुन्नस, है तौबा, मिर्ज़ापुर सीज़न 2 और लक्ष्मी बम), जयंत गाडेकर (बुद्ध मर गया, बिल्लू, कमीने, राउडी राठौर, पोस्टर बॉयज और वेंटिलेटर) शामिल हैं। भिखारी और नदी वाहते), जिग्ना त्रिवेदी, सीमा कुलकर्णी (गावस्कर के राज, आणीबाणी और 8 डॉन 75), फरजान करंजिया (फिल्म चोथो वाड्रा, यशोदा, वेब सीरीज पारसी बावा करे धमाल और टीवी शो बावा वर्डिक्ट और बावा गिरी हैं।

रियल बॉक्स

कालजयी फिल्मों की कारोबारी सफलता

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

कालजयी फ़िल्में वे होती है, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करती, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। कारोबारी रूप से सफल होने और फिल्मों के कालजयी होने में बड़ा अंतर है। जरुरी नहीं कि करोड़ों कमाने वाली फिल्में बाद में भी याद रखी जाए। बॉक्स ऑफिस पर कारोबारी सफलता ध्यान केंद्रित करती हैं, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना। इसी तरह फिल्मों की कमाई का कुछ अलग ही अर्थशास्त्र है। आजकल उसी फिल्म को हिट माना जाता है, जो कमाई में करोड़ों का आंकड़ा पार कर ले।

फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से कई गुना ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी कमाई का आकलन किया जाता है। समझने वाली बात ये है कि फिल्म की लागत जितनी कम होगी, उसकी सफलता की संभावना उतनी ज्यादा होगी। लेकिन, करोड़ों की लागत में बनी फिल्मों के साथ रिस्क ज्यादा होती है। यदि दर्शकों ने उन्हें नकार दिया तो सारी निर्माण लागत भी पानी में चली जाती है। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि 'आदि पुरुष' की निर्माण लागत करीब 500 से 700 करोड़ रुपए थी। लेकिन, फिल्म की कमाई कुल मिलाकर लगभग 340-388 करोड़ रुपए हुई। इससे मेकर्स को भारी नुकसान उठाना पड़ा। जबकि, 'सैयारा' फिल्म के निर्माण का बजट लगभग 30-45 करोड़ है और इसने 450 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। इसे एक बड़ी व्यावसायिक सफलता माना जा सकता है।

सबसे बड़ा सवाल यह कि इतनी निर्माण लागत और कमाई के बावजूद ये फ़िल्में क्या साल-दो साल भी याद की जाएंगी! शायद नहीं, क्योंकि फ़िल्में उनकी महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि उनके कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती है। यही कारण है कि कई दशकों बाद भी कागज के फूल, मदर इंडिया, मुग़ल-ए-आजम, बॉबी, शोले और दीवार जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। कई बार फिल्म के व्यावसायिक रूप से सफल न होने के बाद भी उन्हें कथानक की वजह से याद किया जाता है जैसे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला।' क्योंकि, मसला फिल्मों की कारोबारी सफलता और उनके कालजयी होने का है! क्योंकि, सौ साल से ज्यादा लंबे फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फ़िल्में उंगली पर गिनी जा सकती है, जो हर दौर में पसंद की जाती है।

'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। जबकि, हिट फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ कमाई करती हैं। ऐसी फिल्में भी आई, जिन्होंने सिर्फ कमाई की। व्यावसायिक रूप से सफल हुई, लेकिन उनकी कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं, कुछ फिल्में कम बजट में बनीं और कालजयी हुई।

सिर्फ करोड़ों का कारोबार करने वाली फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पाती। क्योंकि, बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि, कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थायी सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर हिट अक्सर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति

होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन, कालजयी फिल्में सार्वभौमिक मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं। दरअसल, बॉक्स ऑफिस सफलता के कारक अलग ही हैं। आज के दौर में फिल्में अक्सर बड़ी उम्मीदों और भव्य प्रचार के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी आभामंडल रचा जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन ये हर बार सफल नहीं होता, इसलिए कि ये तात्कालिक हो सकते हैं।

कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीक नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं। यदि फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरुरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं और वे लंबे समय तक याद रखी जाती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

यदि सिनेमा की कला को गहराई देने वाली कालातीत फिल्मों का जिक्र किया जाए तो 'मदर इंडिया' (1957) को भुलाया नहीं जा सकता। यह फिल्म एक विधवा मां के जीवन की पीड़ा पर आधारित है। इसमें ऐसी मां का संघर्ष को दिखाया गया, जो सामाजिक अन्याय और गरीबी से लड़ते हुए अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है। 1977 में आई 'शतरंज के खिलाड़ी' (1857) विद्रोह की पृष्ठभूमि में मानवीय संबंधों को दर्शाया गया। सत्यजीत रे निर्देशित यह फिल्म सिपाही विद्रोह के दौरान दो नवाबों के निजी जीवन और उनके शतरंज के खेल पर आधारित है। 1981 में आई रेखा की फिल्म 'उमराव जान' (1981) जैसी फिल्म में एक वैश्या के जीवन की जटिलताएं दिखाई गई। यह फिल्म दुखद प्रेम कहानी और उसके जीवन की चुनौतियों का खुलासा है। ऐसी ही एक कालजयी फिल्म 2001 में आई आमिर खान की 'लगान' भी है। इसमें गांव वाले अंग्रेजों से क्रिकेट खेलकर और जीतकर अपना लगान माफ़ करवाते है। ऐसी ही एक फिल्म 'पीकू' (2015) है जिसमें पिता-पुत्री के रिश्ते को अनोखे अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है। एक पिता और बेटी के रिश्ते पर आधारित यह फिल्म, उनके अनोखे और हास्यप्रद यात्रा का दस्तावेज है। ये वे फ़िल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

दाऊद आतंकवादी नहीं बोलकर उलझी ममता

सुप अभिनेत्री से साध्वी बनी ममता कुलकर्णी का दाऊद इब्राहिम को लेकर एक बयान चर्चा में है। उनसे गोरखपुर में दाऊद इब्राहिम को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने कहा 'मेरा दाऊद से दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं था। किसी एक का नाम जरूर था, लेकिन आप देखोगे उसने कोई बम ब्लास्ट या एंटी नेशनल चीज नहीं की थी। देश के अंदर, मैं उनके साथ तो नहीं हूं ... वह टेररिस्ट नहीं था, जिनके साथ आप मेरा नाम लेते हो, उन्होंने मुंबई में बम ब्लास्ट नहीं किया। दाऊद को मैं अपने जीवन में कभी नहीं मिली।' इस बयान पर ममता कुलकर्णी ने अब अपनी सफाई भी दी।

ममता कुलकर्णी का नाम विक्की गोस्वामी के साथ जुड़ा रहा। माना जा रहा

है कि दाऊद के सवाल पर विक्की गोस्वामी का नाम लिए बिना कह रही थीं कि वो आतंकवादी नहीं थे। इससे पहले भी कई इंटरव्यू में वह विक्की गोस्वामी को लेकर बहुत सी चीजें कह चुकी हैं। ऐसे में अब दाऊद इब्राहिम के समर्थन में ममता के चौकाने वाले बयान ने सोशल मीडिया पर हलचल मचा दी।

अपने बयान पर ममता कुलकर्णी ने सफाई दी और कहा कि बयान को ठीक से सुने और साधु-संत विवेक का इस्तेमाल करें। उन्होंने कहा कि उनका नाम कभी दाऊद से नहीं जुड़ा। कुछ समय के लिए विक्की गोस्वामी से जुड़ा, लेकिन उसका नाम कभी देश विरोधी गतिविधियों में नहीं आया। महामंडलेश्वर यमाई ममता किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर लक्ष्मी किन्नर के साथ गोरखपुर में आयोजित एक कार्यक्रम का हिस्सा थीं। 90 के दशक में अपनी खूबसूरती और एक्टिंग से सबका दिल जीत लेने वाली ममता कुलकर्णी अब संन्यास ले चुकी हैं और धर्म की राह पर हैं। वह अब महामंडलेश्वर यमाई ममता नंदगिरी बन गई हैं।

नाती की फिल्म का ट्रेलर देख अमिताभ भावुक

अमिताभ बच्चन ने अपने करियर में खूब नाम कमाया है और अपनी शानदार एक्टिंग से पिछले 7 दशक से वे फैंस का विश्वास जीतते आए हैं। उन्हीं की तरह उनके बेटे अभिषेक बच्चन ने भी एक्टिंग में अपनी राह चुनी और आज उनके अभिनय की हर ओर प्रशंसा की जा रही है। इस क्रम में एक और जनरेशन जुड़ गई। अमिताभ की बेटी श्वेता नंदा के बेटे अगस्त्य नंदा की फिल्म 'इक्कीस' आ रही है। इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ। इसे देख अमिताभ बच्चन काफी खुश हैं और प्राउड फील कर रहे हैं। उन्होंने अपने नाती का इस मौके पर हौसला बढ़ाया।

इस मौके पर उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फिल्म का ट्रेलर

शेयर करते हुए लिखा 'अगस्त्य, जब तुम पैदा हुए तो मैंने तुम्हें अपने हाथों में उठाया, कुछ महीनों बाद जब मैंने तुम्हें फिर से गोद में उठाया तो तुम्हारे कोमल हाथों ने मेरी दाढ़ी के साथ खेलना शुरू कर दिया। आज तुम दुनियाभर के थिएटर में खेल करते नजर आ रहे हो, तुम स्पेशल हो। तुम्हारे लिए प्रार्थनाएं और तुम्हें ढेर सारा आशीर्वाद। भगवान करे कि तुम अपने काम में और यश प्राप्त करो। तुम हमारे परिवार की शान हो।' 'इक्कीस' फिल्म की बात करें, तो ये फिल्म सेना अधिकारी और परमवीर चक्र विजेता अरुण खेत्रपाल के जीवन पर आधारित है। 2 मिनट 39 सेकंड लंबे ट्रेलर में अगस्त्य नंदा ने अपनी परफॉर्मेंस से सभी का ध्यान खींचा। इस ट्रेलर को पसंद किया जा रहा है। ये फिल्म दिसंबर 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है.

सिने जगत में भी है धोखे का बोलबाला

अशोक जोशी

'आर पार' फिल्म का गाना 'बाबूजी धीरे चलना, प्यार में जरा संभालना, बड़े धोखे हैं, बड़े धोखे हैं इस राह में' फ़िल्मी दुनिया के लिए काफी हद तक सही है। सिनेमा की इस दुनिया में ज्यादातर कथानक नायक और नायिका को मिलाने के लिए रचे गए, पर

असलियत में कई नायक-नायिका ऐसे हैं, जो सच्चा प्यार करके भी कभी मिल नहीं सके। ऐसे चंद उदाहरण हैं दिलीप कुमार-मधुबाला और राजेंद्र कुमार-सायरा बानो। वैसे तो इस लिस्ट में अमिताभ-रेखा, शत्रुघ्न सिन्हा-रीना रॉय और राज कपूर-नरगिस का नाम भी लिया जा सकता है। लेकिन, ये धोखे के नहीं, बल्कि किसी कारण से न मिल पाने के प्रसंग हैं।

धोखा हमारे समाज में रचा बसा है। धोखे भी कई तरह के होते हैं। इनमें भी प्यार में खाया धोखा सबसे ज्यादा दर्द देता है। फिल्मों में इसे बेवफाई भी कहा जाता है। लेकिन, दिलचस्प बात यह है कि फिल्म दर फिल्म वफा की कसम खाने और निभाने वाली अभिनेत्रियों के साथ भी प्यार के नाम पर धोखे हुए हैं। मजे की बात यह है कि इन्हें धोखा देने वाले या इनसे दामन छुड़ाने वाले नायक वह हैं जिनके साथ गलबहियां करते हुए इन नायिकाओं ने पेड़ों के इर्द गिर्द प्रेम गीत गाकर दर्शकों को मस्त किया था।

बात पुरानी नायिकाओं से आरम्भ की जाए। मधुबाला को हिंदी की वीनस का दर्जा हासिल था। जिनकी मुस्कान पर न केवल नायक और निर्माता मुग्ध थे , बल्कि दर्शक तक इनकी अदाओं पर फिदा थे। फिल्मी पर्दे पर मधुबाला और दिलीप कुमार की जोड़ी को सबसे ज्यादा हसीन जोड़ी माना गया। इनकी फिल्में हिट भी हुई और दोनों का प्यार भी खूब परवान चढा। एक बारगी लगा कि यह जोडी रील लाइफ से परे अपनी रियल लाइफ में भी निकाह कर बेहद सुखी रहेगी। लेकिन, फिल्म 'नया दौर' जिसमें बीआर चोपड़ा ने पहले मधुबाला को ही नायिका चुना था। फिल्म की शूटिंग भी आरम्भ हो गयी थी। मधुबाला के कहने पर ही बीआर चोपड़ा ने पहली बार ओपी नैयर को अपनी फिल्म में शामिल किया था। क्योंकि, मधुबाला और ओपी नैयर के बीच इतनी जबरदस्त ट्यूनिंग थी कि मधुबाला अपने निर्माताओं के सामने यह शर्त रख देती थी कि यदि उनकी फिल्म में ओपी नैयर को साइन किया गया तो वह अपनी फीस 25 हजार रुपए कम कर देगी। उन दिनों यह रकम बहुत ज्यादा होती थी। लेकिन,

फिल्म की आउटडोर शूटिंग मध्य प्रदेश के बुधनी में जाने के लिए मधुबाला के पिता ने इंकार कर दिया। उन्हें शक था कि यहां जाकर मधुबाला और दिलीप कुमार का प्यार कुछ ज्यादा ही चढ़ जाएगा।

अपने पिता की बात मानकर मधुबाला आउटडोर शूटिंग के लिए नहीं गई, जिससे बीआर चोपड़ा को बहुत नुकसान हुआ। उन्होंने मामला कोर्ट में डाल दिया, जहां दिलीप कुमार ने सच्चाई बताकर मधुबाला को नाराज कर दिया जिससे उनके प्यार में दरार आ गई और फिल्मी सलीम और अनारकली का कभी मिलन नहीं हुआ। इसके बाद न तो मधुबाला खुश रह सकी और न दिलीप कुमार को ही जीवन भर वो खुशी मिली, जो वे चाहते थे। मधुबाला के दूसरे प्रेमी प्रेमनाथ भी उनसे दूर हो गए। मजबूरी में उन्होंने किशोर कुमार से शादी कर ली, पर दिल की मरीज बनकर अपना जीवन खो बैठी। दिलीप कुमार ने भी शादी का इरादा त्याग दिया था।

दिलीप कुमार के जीवन में प्यार में धोखा खाई सायरा बानो आई। परदे पर सायरा बानो और राजेंद्र कुमार की जोड़ी बहुत हिट मानी जाती थी। उनकी तमाम फिल्में सुपर हिट रहीं। रील लाइफ का प्यार रीयल लाइफ का प्यार बन गया। राजेन्द्र कुमार पहले से शादीशुदा थे। फिल्मों में उनकी छवि भी

एक आदर्श पारिवारिक नायक की थी। लिहाजा वह सायरा से प्यार तो कर सकते थे, लेकिन शादी नहीं कर सकते। इस स्थिति में सायरा से ज्यादा उनकी मां नसीम बानो परेशान थी। उन्होने अपनी चिन्ता दिलीप कुमार के सामने रखी।

फिल्म 'पड़ोसन' के सेट पर दिलीप कुमार और सायरा बानो से मिले। उन्होंने सायरा को बहुत समझाया। लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। तब दिलीप कुमार ने कहा कि राजेन्द्र तुमसे शादी नहीं करेगा, तुम्हें उसे छोड़ देना चाहिए। तुम जवान हो,खूबसूरत हो तुमसे कोई भी शादी कर खुश हो रहेगा। तब सायरा ने उलटा दिलीप कुमार पर ही सवाल दाग दिया,क्या तुम मुझसे शादी करोगे। भावावेश में आकर दिलीप कुमार ने कहा हां मैं तैयार हूं। इस उत्तर की सायरा बानो को भी उम्मीद नहीं थी। लेकिन, बात की बात थी। इस जवाब को सुनकर सायरा बानो को अपने से दोगुना आयु वाले दिलीप कुमार से शादी करनी पड़ी। लेकिन, सायरा को आगे चलकर इस शादी में भी धोखा खाना पड़ा।

शादी के बाद सायरा बानो एक बार गर्भवती हुई। लेकिन उन्हें मातृत्व सुख नहीं मिल पाया। गर्भपात से उदास और हताश सायरा के बारे में यह बताया गया कि वह कभी मां नहीं बन सकती। यह सुनकर दिलीप कुमार और सायरा बानो टूट गए। फिर इसके बाद सायरा बानो को तब अपने शौहर से धोखा खाना पड़ा, जब आस्मां सुल्तान नामक एक अनजान महिला से दिलीप कुमार निकाह कर बैठे। इस निकाह का समाज में इतना विरोध हुआ कि दिलीप कुमार को मजबूरी में ही सही आस्मां को छोड़कर फिर से सायरा बानो की बाहों में आना पड़ा। तब तक सायरा धोखा तो खा ही चुकी थी। बावजूद इसके वह ता उम्र दिलीप कुमार की हमसाया बनी रही। लेकिन कभी न कभी जहां दिलीप कुमार को मधुबाला का धोखा याद आता होगा वहीं सायरा भी बजरिए आस्मां से मिले अपने शौहर से मिले धोखे से आंखें नम करती होगी।

नए सितारों में तो धोखे की परम्परा यूं मानिए कि धोखा देने और धोखा खाने के लिए ही जारी है। ऋतिक रोशन की पत्नी उनसे तलाक ले चुकी है वजह यह बताई गई कि उनका कंगना रनौत से संबंध था जिसे बाद में कंगना ने धोखा बताया। मलाइका भी धोखे का शिकार होकर कई बार प्रेमी बदल चुकी है तो श्वेता तिवारी ने भी प्यार के नाम पर कई बार धोखे खाए हैं।कुछ दिनों पहले यह आरोप था कि गोविन्दा अपनी बीबी को धोखा दे रहे हैं तो इन दिनों माही विज और जय भानुशाली के बीच धोखेबाजी को लेकर तलाक की नौबत आ गई है। हकीकत यह है कि संसार ही एक धोखा है और जब तक यह संसार समाज और सिनेमा है हर राह पर धोखे मिलना ही मिलना है।

हेलमेट लगाओ... कि 'बाइक-रैली' आती है !

प्रकाश पुरोहित

फिर पूरे शहर में यकायक जबदस्त बदलाव नजर आया। जिसे देखो, हेलमेट लगाए चलाए जा रहा है। बाइक यानी साइकल वाले भी हेलमेट लगाए थे। फटफटी पर तीन सवारी, लेकिन सभी हेलमेट में। कुछ-कुछ तो पैदल भी हेलमेट लगाए थे। हद तो तब हो गई, जब कार वाला भी हेलमेट लगाए था! पहले तो पुलिस भी हेलमेट लगाने में हिचक महसूस करती थी।

इंदौर के ट्रैफिक के बारे में यह अफवाह है कि अंग्रेज 1947 में भारत छोड़कर इसीलिए गए थे कि भारतीयों को सब सिखा दिया, लेकिन सलीके से चलना नहीं सिखा सके, इसलिए हिम्मत हार बैठे और भारत को आजाद कर चले गए कि 'अब तुम्हारी तुम भुगतो, हमें नहीं मरना!'

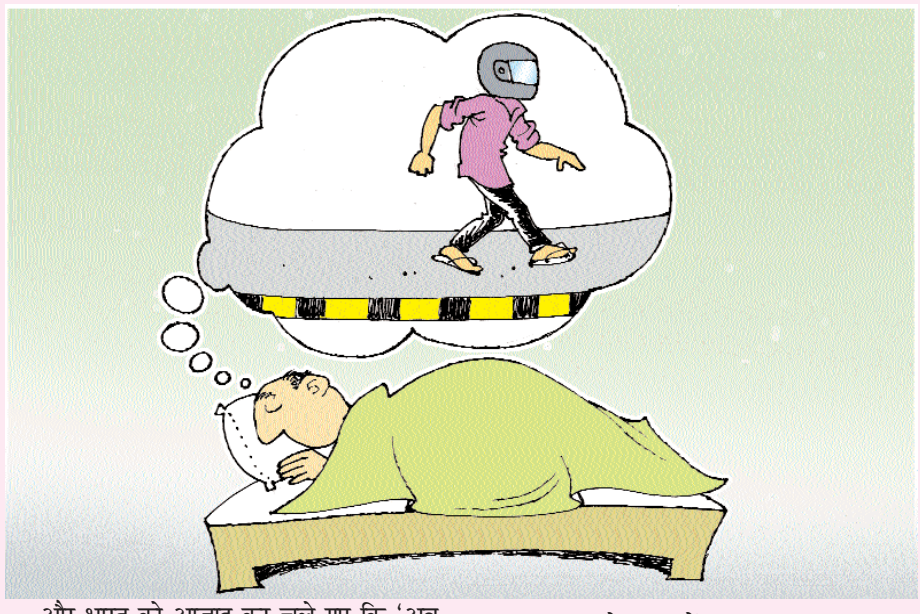

पुलिस ने गलत-सलत फैसले लिए कि जो भी (नेता, अफसर, पुलिस और गुंडों के अलावा) नियम से नहीं चले, उनका चालान बनाने का अभिनय करे और वसूली करे। चालान में गलती करने वाले को पूरा जुर्माना भरना पड़ता है, जबकि तोड़-बट्टे में दोनों तरफ से फायदा है कि अपराधी कम पर छूट जाता है और चालान नहीं बनाते हैं तो पैसा अपना हो जाता है, खजाने में जमा नहीं करना पड़ता है।

चौराहे पर पुलिस के खड़े होने से भी कोई सुधार नहीं हुआ कि छांह में खड़े, मोबाइल देख कर ड्यूटी पूरी कर रहे पुलिस से भला डरता कौन है और अगर किसी को पकड़ ही लिया तो सीधे भिया का फोन आ जाता कि 'अपना ही पट्ठा है, जाने दीजिए, आपकी डी इ में मदद करवा देंगे भोपाल से।' मरता क्या ना करता, छोड़ना ही पड़ता है, ऐसे संगीन मामले में तो।

अब यह तो संभव है नहीं कि जब तक गाड़ी चलाने के पक्के नियम-कायदे याद ना हो जाएं, कड़ा इम्तिहान ना लिया जाए और अपने दमबूते पर उसे पास ना कर लिया जाए, ड्राइविंग लाइसेंस नहीं मिल सकता। होता होगा दुनिया भर के देशों में ऐसा, लेकिन अपने यहां तो घर-बैठे लाइसेंस ना आए तो समाज में उठने-बैठने लायक नहीं रह सकते। जिसे साइकल का हैंडल पकड़ कर पैदल चलना भी ना आता हो, उसे ट्रक का भी लाइसेंस मिल सकता है!

हमारे काबिल इंजीनियर और नेताओं ने बीआरटीएस जैसे फिजूल काम पर करोड़ों रुपए फूंक दिए कि लोग कम से कम बस में तो चलने लगें, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा और अब यह हालत है कि उसे उखाड़ने के लिए ऊपर से देवदूत आ जाएं तो ही जगह खाली हो, वरना तो कोई ठेकेदार क्यों हाथ डालने लगा। जब बना रहे थे तो पूछा नहीं और उखाड़ना है तो हाथ जोड़ रहे हैं। इतनी सारी कोशिशों के बाद भी जब ट्रैफिक में कोई सुधार नहीं हुआ, पुलिस तो पुलिस, आम नागरिक भी हेलमेट लगाने से बचता नजर आया। वही ब्रह्मास्त्र-फैसला लेना पड़ा कि शहर में पुलिस की (मोटर) बाइक रैली-हेलमेट वाली निकाल दी जाए। इसी कड़े फैसले से बचना चाह रही थी पुलिस और वही लेना पड़ा।

उस रोज पूरे शहर में दहशत रही कि पुलिस की हेलमेट (मोटर) बाइक रैली निकल रही है। मांओं ने बच्चों को आंचल में छिपा लिया और लोग सड़क से यूं भागने लगे, जैसे रामगढ़ में गब्बर आ गया हो। हेलमेट की दुकानों पर वैसी ही भीड़ थी, जैसी दीवाली के समय सराफा बाजार में चांदी खरीदने के लिए। लोग यूं खड़े थे, जैसे भंडारे की प्रसादी ग्रहण करने आए हों!

हेलमेट खरीदने वालों को कूपन दिए जा रहे थे, पूछा जा रहा था कि आपके पास दोपहिया गाड़ी है, इसका सबूत लाइए। थाने से वेरीफाई करवाइए कि आपके पहले कई-कई चालान बने हैं और आपने पहले कभी हेलमेट का उपयोग नहीं किया है। घर के किसी बालिग या नाबालिग सदस्य के पास अपना या किसी और का हेलमेट नहीं है। यदि घर में पांच गाड़ियां हैं तो दो हेलमेट ही मिलेंगे, एक बार में एक ही गाड़ी निकलेगी बाहर। दो को बैठाना जरूरी है, भले उसे फिर बाहर कोई काम ना हो।

''आप तो कार से आए हैं, फिर आपको हेलमेट की क्या जरूरत?'' दुकानदार ने पूछा।

''देखा नहीं, पुलिस ने मोटर बाइक रैली निकाली थी कल... क्या पता, कार के लिए भी जरूरी हो। दुर्घटना से सावधानी भली।'' ग्राहक का जवाब था।

''तुम तो पैदल आए हो, हमारे जासूसों ने बताया है?''

''तो... क्या हुआ, पैदल को हेलमेट लगाना मना है क्या? जिस शहर में चलने को फुटपाथ ना हों, वहां आम नागरिक का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह कम से कम हेलमेट तो लगा कर चले, क्या पता कुचलने के बाद भी सिर बच जाए। अब हर काम तो सरकार करने से रही। कुछ तो आम जनता को भी करना चाहिए, अगर जिंदा रहना है, टैक्स देने के लिए तो... !''

(आप तो जानते ही हैं कि किसी रात मुझे ऐसे ही ऊल-जलूल सपने आते रहते हैं। वैसे तो पूरे आठ घंटे का था, सिर्फ बानगी दिखाई है...!)।

साहिब बीबी गुलाम: सच्चे किरदारों वाली एक पुस्तक, एक फिल्म

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

एक फिल्म अगर किसी कहानी पे बेस्ड होती है तो ज़ाहिर है पहले हम विमल मिश्र के उपन्यास ''साहब बीबी, गुलाम'' का ज़िक्र करें। इस पुस्तक का पहला संस्करण सन् 1979 में निकला था। मेरे पास 1989 का राजकमल प्रकाशन का संस्करण है। अद्भुत रोंगटे खड़े करने वाला, रोमांचक उपन्यास है। कहानी है कलकत्ता के बहू बाजार स्ट्रीट, सेंट्रल एवेन्यू, वनमाली सरकार लेन, जॉब चार्नक के उत्तराधिकारी अंग्रेज (जिन्होंने कालीकट की नकल पर सूतानूटी का नाम रखा था कैलकेटा) उस जमाने की चार घोड़े की गाड़ी, लैण्डोलेट, फिटन, सुनहले रूपहले कमरबंद वाले चोबदार डाकिया, हुक्काबरदार, खानसामे, चालीस डांडोवाली मयूरपंखी नाव, पाई का साग, छोटी मछ्ली, तानपूरे के अटूट सुर के साथ तबले पर कहरवा का रेला विवेकानंद, रवींदनाथ ठाकुर का प्रभाव इस तरह बसा कलकत्ता 1960 में। देखिये कथा तो अलग है पर जो विमल बाबू ने उस समय के जमींदार, नौकर, अंग्रेज रहन सहन वातावरण पर लिखा है उसको लेकर हूबहू फिल्म बनाना अद्भुत प्रयोग है।

कहानी फ्लैश बैक से शुरू है। भूतनाथ ओवरसियर है और वनमाली सरकारी लेन तोड़ने आया। उस खंडहर हवेली को जहाँ उसका दिमाग परिपक्व हुआ बस भूतनाथ अतीत में खो गया। उसे साईस इब्राहीम घोड़ा कसता, छोटी बहू का गान, घड़ी बाबू, खजांची विधु सरकार, बंषी, गिरि, मंझली बहू, बड़ी बहू, दरबान की आवाज़ सुनाई देने लगी। अगर मैं इतने चरित्रों का वर्णन बताऊँगी तो शायद कई दिन लग जाएंगे। फिल्म काफी शॉर्ट है फिर भी उस जमाने में 17 रील की बनी थी। यूँ सारे कुछ इस प्रकार है।

भूतनाथ अपने गांव के जीजा के पास कलकत्ते आया नौकरी ढूंढने पढ़ा लिखा था, सुविनय बाबू के ''मोहिनी सिंदूर'' में काम मिला, खाना भी मिलता था उसका हिसाब देखती थी उनकी पुत्री ''जवा'' जो रूपसी थी गाने गाती थी पूरे घर पर नज़र रहती और भूतनाथ से हमेशा बहस होती जवा का चरित्र वहीदा रहमान ने निभाया था। अब आते हैं जमींदार साहब की हवेली में जहाँ बड़ी बहू है जिनके पति गुज़र चुके हैं उन्हें 100 बार हाथ धोने की, छू गई कहकर कईयों बार नहाने की आदत है। मंझली बहू अपनी सहायक गिरि के साथ बाघ गोटी खेलती थी और पुराने जेवर तोड़ नये बनवाती थी फिर आती छोटी बहू, बेहद खूबसूरत बड़ी सी बिंदी, यषोदा दलाल की पूजा करती, भजन गाती, गरीब घर की स्वाभिमानी, पति का साथ चाहने को बेकरार, जो घर पे रात बिताने को नामर्दानगी सोचते हैं उनकी एक स्थाई रखैल है ''चुन्नी'' जिसको उन्होंने महल घोड़ा गाड़ी नौकर चाकर सब दे रखे हैं वो बहुत खुश है।

मंझले बाबू रौबदार घर की जमींदारी उसका पैसा सब वो ही देखते छोटे बाबू को सिर्फ दस्तखत से मतलब था छोटी बहू छोटे बाबू को देखने को तरसती रोती लोग उनका उपहास बनाते। देखिये आज के साहित्य लेखन में ये फर्क आ गया है कि पहले के उपन्यासकार चरित्र से जुड़े पूरे वातावरण और उससे जुड़े लोगों का विस्तृत वर्णन करते थे सो उपन्यास खूब मोटा हो जाता पर हम लोग खूब शौक से पढ़ते पर आज का पाठक सीधे कथा पढ़ने का शौकीन है। भूतनाथ को छुपछुपा कर छोटी बहू के कमरे में जाना होता है बुद्धु सा, भोला भूतनाथ छोटी बहू का अप्रतिम सौंदर्य देख मुग्ध हो जाता है और आदर के साथ उनकी मुहब्बत में पड़ जाता है जबकि छोटी बहू उसके भोले व्यवहार पर मुग्ध हो उसे छोटे भाई की तरह समझती। उनका अनुरोध था कि सुना है ''मोहिनी सिंदूर'' से पति को वश में कर सकते हैं वो भूतनाथ को ''सिंदूर'' लाने के पैसे देती है पतिव्रता इतनी की पति का अंगूठा पानी में डूबोकर व्रत खोलती पर पति कहाँ से पाती? सो वंशी रखैल के कोठे पर जाता और नषे में उनका अंगूठा पानी में डुबो के छोटी बहू के लिये लाता। सब भूतनाथ को ''साले साहब'' के नाम से बुलाते इधर बड़े बाबू के बेटे ''नन्हे बाबू'' को गीत और शराब का नषा था सो साले बाबू तबले पर संगत देने लगे।

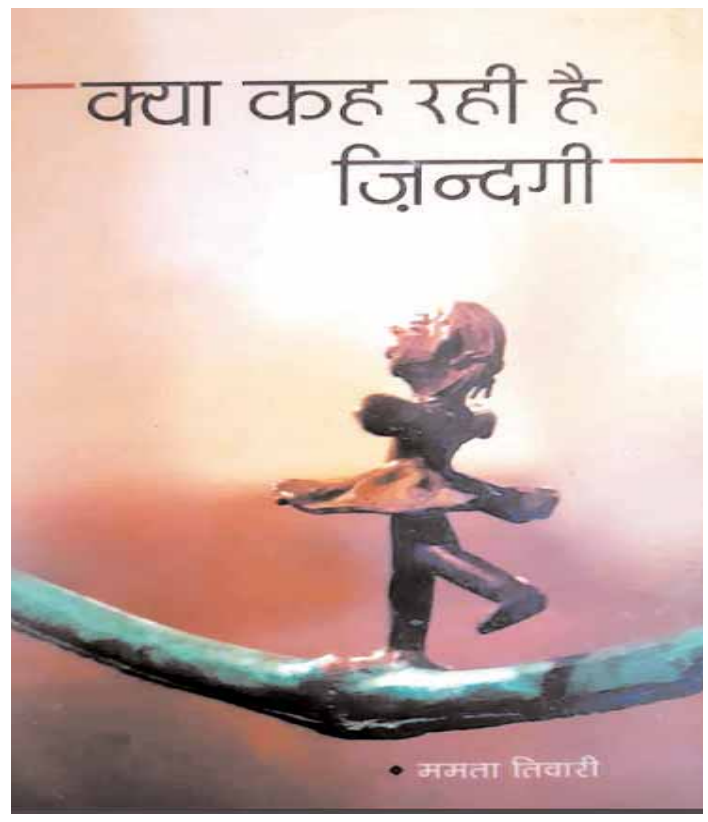

छोटे बाबू और छोटी बहू की खूब बहस होती है भूतनाथ शर्मिंदा हो जाता है। इधर ''नन्हें बाबू'' की नकली अमीर के यहाँ शादी होती है उनके ससुर उन्हें अपनी तरफ करके जमींदारी ख़त्म करके कोयले की खान खरीदवाते हैं जो बाद में धोखाधड़ी साबित होती है और वनमाली सरकार का भव्य महल भी बिक जाता है खैर ये आखिर का किस्सा है इसी बीच छोटी बहू अपने पति को वष में करने के लिये उनसे हर वो चीज़ करने को कहती है जो उनकी रखैल करती है और शराब के चक्कर में पड़कर उसकी लत ही डालती है छोटे बाबू अब दिन भर उनके साथ रहते। इसी बीच जवा का विवाह सुपवित्र बाबू से तय हो जाता है। जवा के पिता की हालत खराब हो जाती है ''मोहिनी सिंदूर'' का कारखाना बंद कर दिया जाता है। भूतनाथ को उनकी कृपा से कांट्रेक्टर का काम मिल जाता है वो मुंगेर चला जाता है। इसी बीच भूतनाथ को पता चलता है ब्रजराखाल उनका जीजा अंग्रेजों के विरूद्ध अभियान में है विवेकानंद जी को पूजता है, अंग्रेजों पर बम फेंकता है। भूतनाथ जब लौट के आता है तो सुविनय बाबू उसे बुलाकर उसके बचे पैसे देते हैं। छोटे मकान में षिफ्ट हो जाते हैं जवा और भूतनाथ मन ही मन एक दूसरे को चाहते हैं पर जवा ब्राह्म है और उसका विवाह तय हो गया होता है। भूतनाथ रूपयों की थैली छोटी बहू के पास रखने जाता है तो छोटी बहू उसे नषे में तिजोरी की चाबी देती है जिसमें ढेर सारे सोने के जेवर होते हैं छोटी बहू गिड़गिड़ाती है शराब लाने को भूतनाथ कसम दिलाता है जो वो तोड़ देती है। इधर ब्रजराखाल के साथ खड़े भूतनाथ को अंग्रेजों की गोली लग जाती है उसकी आंख खुलती है जवा के घर में जवा बहुत स्नेह से उसकी देखभाल करती है गल्ती से भावविभोर हो भूतनाथ उसका पल्ला पकड़ लेता है जवा गुस्से में पल्ला छुड़ा के चली जाती है भूतनाथ शर्मिंदा हो जाता है तभी बंसी उसे बचा लेता है छोटी बहू ने पालकी भेजी थी उसे लाने के लिये। भूतनाथ तुरंत चला जाता है हवेली में उसे एक चोर कमरे में वंषी रखता है जिसका एक दरवाजा छोटी बहू के कमरे में खुलता है उसका खाना रहना महिनों चलता है।

इधर छोटे बाबू छोटी बहू में कहासुनी होती है छोटी बहू व्यंग्य कर देती है तुमने एक बच्चा दिया होता क्या दे सकोगे सो छोटे बाबू चुन्नी के यहाँ जाने की तैयारी करते हैं कंगाल होने की खबर से बेखबर मंझले बाबू, कबूतरबाजी, नई गाड़ी खरीदने और नौका विहार में लगे रहते हैं पर अचानक एक दिन मोटर गाड़ी वापस चली जाती है। जान बाजार पहुँच कर छोटे बाबू देखते हैं उनकी रखैल उनके दुष्मन की बांहों में है काफी लड़ाई होती उन्हें घायल अवस्था में हवेली में लाकर सौंप दिया जाता है उन्हें पैरालिसिस हो जाता है। छोटी बहू को देख अब छोटे बाबू को दुःख होता है उसकी शराब छूट जाती है और छोटी बहू गहने बेच बेच कर शराब मंगाती है। एक दिन भूतनाथ से शराब के लिये तिजौरी खुलवाती है तो पता चलता है सारे गहने खत्म हो चुके अब भूतनाथ भी कभी कभी अपने पैसों से शराब लाता है इधर सुविनय बाबू गुज़र जाते हैं जवा सुपवित्र को भगा देती है बहुत आग्रह से पूछने पर भूतनाथ को बताती है बचपन में उसके दादाजी उसे माँ बाप से चुरा ले गये थे कहीं वे उसे ब्राह्म ना बना दे सो उसका एक साल में ही ब्राह्मण लड़के से ब्याह कर देते हैं 10 बरस की उम्र में वो माता पिता के पास आ जाती है। मरने से पहले पिता उसे बताते हैं कि उसकी दादी ने पता छोड़ा है। जवा उसे पता देती है कि वो पता लगाये क्योंकि वो अब शादीषुदा है अपने ससुराल जाना चाहती है भूतनाथ उस पते को देख दंग रह जाता है ''अतुल्य चक्रवर्ती'' उसका अच्छा नाम था पता भी उसका है उसके गांव के पंडित उसे मिलते हैं जो उसके विवाह की पुष्टि करते हैं। इसी बीच एक कथा रह गई भूतनाथ का इक दोस्त ननीलाल जो गांव का था शहर में गलत सलत धंधे कर बड़ा आदमी बन विदेष चला जाता है पर भूतनाथ को बहुत मानता है। मंझले बाबू को भूतनाथ के बारे में पता चलता है कि वो छोटी बहू के कमरे में जाता है तो वो उसके पीछे गुंडे लगा देते हैं बड़ी बहू अपने मायके मंझले बाबू ससुराल चले जाते हैं। सारी संपत्ति अब ननीलाल के पास चली जाती है। अचानक सरकारी आदमी घर खाली कराने आता है छोटी बहू बेहोष, छोटे बाबू पक्षाघात के षिकार भूतनाथ 2 दिन का समय मांग ननीलाल को तार करता है ननीलाल हवेली छोड़ देता है। इधर छोटी बहू भूतनाथ के साथ रात में दूर गांव के साधु से आर्षीवाद लेने जाती है। मंझले बाबू देख लेते हैं गाड़ी पे हमला होता है। जब भूतनाथ की अस्पताल में नींद खुलती है तो वो छोटी बहू के बारे में पूछता है पता चलता है उनका कुछ पता नहीं और छोटे बाबू गुजर गये वो छुपता छुपाता हवेली जाता है देख कर होष उड़ जाते हैं ना नौकर चाकर, ना दरबान, ना घोड़ा गाड़ी। उसकी कंपनी उसे ओवरसियर बना देती है।

अब यहाँ फ्लैश बैक ख़त्म होता है मजदूर हवेली में खुदाई कर रहे हैं उन्हें एक कंकाल मिलता है जिसके हाथों में सोने के कड़े होते हैं तब भूतनाथ को याद आता है जब मालिकों के नौकरानियों से संबंध या बच्चे होने की बात सुनते थे तो हवेली में पीछे गड़वा देते थे। भूतनाथ फूट फूट कर रोता है। वो छोटी बहू का कंगन पहचानता था। अब फिल्म में बताया गया है भूतनाथ रोता रोता घोड़ागाड़ी में बैठ जाता है जिसमें जवा बैठी रहती है उसकी पत्नी के रूप में। उपन्यास में भूतनाथ जवा से कहता है ना इस नाम का कोई परिवार है ना लड़का, तुम सुपवित्तर से शादी कर लो जवा ऐसा ही करती है। मीना कुमारी के अलावा छोटी बहू, भूतनाथ का रोल गुरूदत्त व छोटे बाबू रहमान और भी सधे कलाकार मानों इसी रोल के लिये बने हो। मैं जब इस उपन्यास को पढ़ती हूँ रौंगटे खड़े हो जाते हैं यथार्थ से जुड़ा एक एक दृष्य, ऐसे लिखने वाले कहाँ गये जो हमें अपने साथ हवेली में, बाज़ार में, कमरे में, रसोई में ले जाते थे और हम भी उनके बीच जब तक जीते जब तक दूसरा उपन्यास नहीं मिल जाता। किरदार इतने सच्चे कि कहीं मिल जायें और मैं उनसे पूछूं और क्या कह रही है जिंदगी ?

पुरानी किताब के पन्ने पलटते हुए !

❑ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

अमेरिकी महिला वर्जीनिया गिफ्रे ने दावा किया कि जब वह सत्रह बरस की थीं, तब एप्सटीन और साथी गिलेन मैक्सवेल ने उन्हें प्रिंस एंड्रयू के साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया। गिफ्रे ने कहा कि यह घिनौनी हरकत लंदन, न्यूयॉर्क और कैरेबियन में एप्सटीन के द्वीप पर हुई। एंड्रयू ने कहा कि उन्हें इस महिला की कोई याद नहीं है और किसी भी तरह का गलत नहीं किया। इतना ही नहीं, नवंबर 2019 में प्रिंस एंड्रयू ने इंटरव्यू भी दिया, जिसका मकसद आरोपों को झूठा साबित करना था, पर उलटा हो गया। जनमत खिलाफ हो गया और छवि खराब हुई।

न ब्रिटिश शाही परिवार का नाम मर्यादा, अनुशासन और साख के सहारे ही है, पर इस परिवार को घर के ही चिराग से ही आग लग गई, जब महारानी एलिजाबेथ (द्वितीय) के लड़के प्रिंस एंड्रयू (ड्यूक ऑफ यॉर्क) पर ज्यादती के आरोप लगे। यह झगड़ा न सिर्फ ब्रिटिश राजशाही के लिए बड़ा झटका था, बल्कि दुनिया में राजपरिवार की छवि पर बट्टा लगा दिया। प्रिंस एंड्रयू का जन्म 19 फरवरी 1960 को लंदन में हुआ था। महारानी एलिजाबेथ (द्वितीय) और प्रिंस फिलिप के तीसरे संतान और दूसरे लड़के हैं। ब्रिटिश नौसेना में नौकरी की और फॉकलैंड युद्ध (1982) में हिस्सा लिया। बरसों तक 'ड्यूक ऑफ यॉर्क' की उपाधि के साथ शाही रहे, पर आरोपों ने मिट्टी डाल दी।

शुरुआत अमेरिकी व्यापारी और यौन अपराधी जैफरी एप्सटीन से एंड्रयू की दोस्ती से हुई। एप्सटीन पर नाबालिग से ज्यादती और मानव तस्करी के आरोप थे। प्रिंस एंड्रयू और एप्सटीन की जान-पहचान 1990 से थी और दोनों कई बार साथ दिखे। जब एप्सटीन को पहली बार सजा (2008) हुई, तब भी दूरी नहीं बनाई। यही भारी पड़ा।

अमेरिकी महिला वर्जीनिया गिफ्रे ने दावा किया कि जब वह सत्रह बरस की थीं, तब एप्सटीन और साथी गिलेन मैक्सवेल ने उन्हें प्रिंस एंड्रयू के साथ यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर किया। गिफ्रे ने कहा कि यह घिनौनी हरकत लंदन, न्यूयॉर्क और कैरेबियन में एप्सटीन के द्वीप पर हुई। एंड्रयू ने कहा कि उन्हें इस महिला की कोई याद नहीं है और किसी भी तरह का गलत नहीं किया। इतना ही नहीं, नवंबर 2019 में प्रिंस एंड्रयू ने इंटरव्यू भी दिया, जिसका मकसद आरोपों को झूठा साबित करना था, पर उलटा हो गया। जनमत खिलाफ हो गया और छवि खराब हुई।

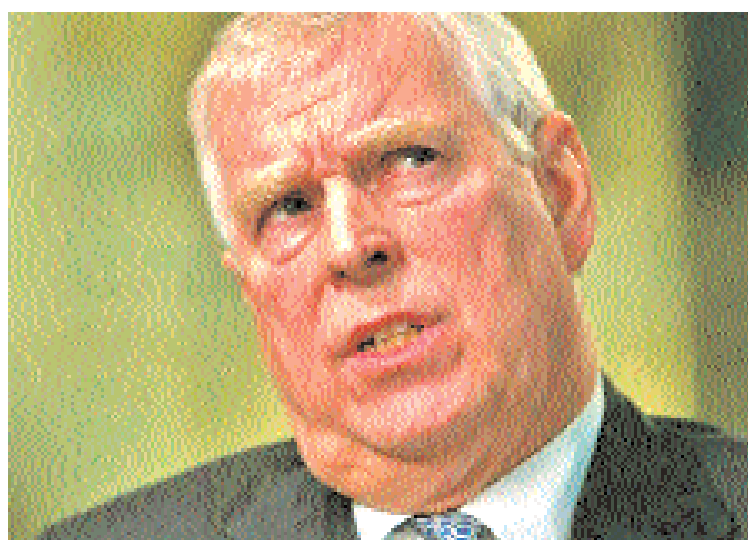

वर्जीनिया गिफ्रे ने अमेरिकी अदालत में प्रिंस एंड्रयू के खिलाफ मुकदमा दायर किया। कई माह के बाद (2022)दोनों के बीच समझौता हुआ। एंड्रयू ने अपराध नहीं माना, पर कई लाख डॉलर देकर मामला खत्म कर दिया। समझौते पर एंड्रयू ने कहा कि जिनके साथ ज्यादती हुई है उनका सम्मान करते हैं। उन्हें न्याय मिलना चाहिए। महारानी एलिजाबेथ (द्वितीय) ने इस बात को गंभीरता से लिया।

उन्होंने एंड्रयू से सभी पद (जनवरी 2022) ले लिए और शाही छाया से बेदखल किया। कहा कि उपाधि का इस्तेमाल नहीं करेंगे। यह फैसला कह रहा था कि शाही परिवार उन्हें सदस्य नहीं मानता। महारानी के बाद एंड्रयू ने अंतिम संस्कार और पारिवारिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। वहां भी विरोध झेलना पड़ा। तीस अक्टूबर को बकिंघम पैलेस ने कहा- महामहिम ने आज प्रिंस एंड्रयू की शैली, उपाधियों और सम्मान हटाना शुरू कर दिया है। प्रिंस एंड्रयू अब एंड्रयू माउंटबेटन विंडसर होंगे। अभी तक विंडसर के महल के परिसर में रहते हैं और रॉयल लॉज की उनकी लीज ने उन्हें रहने के लिए कानूनी सुरक्षा दी है। लीज वापस करने के लिए नोटिस दिया है। वह किसी दूसरे घर में चले जाएंगे। यह सख्त कदम जरूरी माने जा रहे हैं, भले ही प्रिंस आरोपों से मुकरते रहे हों।

किंग चार्ल्स बताना चाहते हैं कि उनकी संवेदनाएं और सहानुभूति जुल्म सहने वालों के साथ रहेगी। प्रिंस एंड्रयू का मामला ब्रिटिश राजशाही का काला अध्याय माना जाएगा। दिखा दिया कि चाहे कोई कितने भी ऊंचे पद पर क्यों न हो, समाज और न्याय की अदालत में सभी समान हैं। एंड्रयू कानूनी दोषी नहीं ठहराए, लेकिन जनता की अदालत में साख खो चुके हैं। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए चेतावनी है कि ताकत और साख से ऊपर नैतिकता और जिम्मेदारी होती है।